ISBN:978-93-341-0029-7

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट

डॉ. राजीव अग्रवाल
राजेश कुमार
प्रतिभा सिंह

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

राजेश कुमार

एम.ए. (भूगोल), एम.एड.

प्रतिभा सिंह

एम.ए. (English, इतिहास), एम.एड.

प्राक्कथन

भारत सदैव से ही ऋषि महर्षियों की पवित्र स्थली रही है। प्राचीन काल से ही यहां आध्यात्मिक गुरुओं, योगियों, धर्माचार्य, महापुरुषों का अवतरण होता रहा है। यहां अध्यात्म, सांस्कृतिक, मानवीय एवं जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा भारतीय शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है।

अध्यात्म पर आधारित शिक्षा हमें अच्छे संस्कार देती है और संस्कृति हमारे चेतन को परिष्कृत करती है। प्राचीन शिक्षा में संस्कारों, सामाजिक संस्कृति, राष्ट्रीय चरित्र, विश्व बंधुत्व, वसुदेव कुटुंबकम, चरित्र निर्माण एवं नैतिक आदर्श के लिए पर्याप्त स्थान रहा है। इनके शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन, व्यवहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति, भावी पीढ़ी के नवनिर्माण के लिए हमारे महापुरुषों की प्रेरणा से भारतीय संस्कृति के मूल संस्कारों से विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपने ज्ञान ज्योति से विश्व को आलोकित किया। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रसार एवं प्रचार का एक माध्यम है। इसका प्रमुख उद्देश्य विश्व शांति स्थापित करने, बंधुत्व की भावना विकसित करना, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ज्ञान संचरण, व्यावसायिक दक्षता का विकास करना, जीवन के सभी मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाना तथा आने वाले चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "शिक्षा में अभिनव प्रयोग श्री श्री रवि शंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट" है। पुस्तक को छह भागों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में अध्ययन की पृष्ठभूमि, भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, शिक्षा के संबंध में विभिन्न आयोगों का सुझाव, धर्म एवं शिक्षा, विभिन्न समाज सुधारको का शैक्षिक योगदान, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परसीमांकन, शोध विधि, शोध का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में विषय में प्रयुक्त संबंधित साहित्य का उल्लेख किया गया है।

तृतीय अध्याय में श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट का संचित संक्षिप्त परिचय, उसके उद्देश्य, क्षेत्र, प्रयास एवं प्रभाव के विषय पर अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में श्री श्री रविशंकर का शैक्षिक दर्शन, उनके शैक्षिक विचार, योग एवं जीवन जीने की कलायें तथा समाजिक कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय में श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर नोएडा उत्तर प्रदेश का अवलोकन एवं उसके विषय पर विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया है।

षष्टम अध्याय में संपूर्ण शोध के निष्कर्ष सुझाव से संबंधित शोध के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव, भाभी शोध हेतु सुझाव को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सौददेश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है, इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने के नितांत आवश्यकता होती है। एक मनुष्य के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य की पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक जान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करण में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

डॉ. राजीव अग्रवाल
राजेश कुमार
प्रतिभा सिंह

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	चित्र सूची	IX
अध्याय	**अध्ययन परिचय**	**01-30**

चित्र सूची

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1.5 अध्ययन का औचित्य

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

1.8 अध्ययन विधि

1.9 शोध उपकरण

1.10 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रथम अध्याय- अध्ययन परिचय

1.1. प्रस्तावना

वर्तमान की जड़ अतीत में होती है। भारत के अतीत का गौरव वर्तमान को उज्ज्वल करता हुआ भविष्य को भी आकर्षक बना रहा है। हमारे पूर्वजों ने जीवन को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखा और ***सर्व भूते हिते रतः*** होना ही अपना कर्तव्य समझा।

भारत एक ऐसा देश है जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति तथा आदर्शों एवं परम्पराओं का ही प्रभाव था कि संपूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृत का प्रसार हुआ। यहां यह स्वभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था स्थापित करना और आदर्शों एवं परंपराओं को निर्धारित करना कैसे संभव हो सका तो इस प्रश्न का उत्तर है--- अद्वितीय शिक्षा व्यवस्था उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के द्वारा भावी पीढ़ी का उच्च आदर्शो, आकांक्षाओ ,विश्वासो तथा परम्पराओं और सांस्कृतिक सम्पति को इस प्रकार हस्तांतरित करता है कि व्यक्ति के हृदय में सद्भाव तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा वह प्रकाश है इसके द्वारा मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाया जाता है

आदि काल में मनुष्य पूर्णतयः प्राकृतिक रूप से शिक्षण ग्रहण करता था। वैदिक काल से अनौपचारिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। प्राचीन काल में शिक्षा को विद्या कहा जाता था। भारतीय संस्कृति में ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र बताया गया है - **ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रं। सा: विद्या या विमुक्तये।** जिसका अर्थ है,ज्ञान जीवन की कठिनाइयों से मुक्त कराता था।

प्राचीन काल में केवल पुस्तकीय ज्ञान को शिक्षा का पर्यायवाची नहीं माना गया था ना ही जीवकोपार्जन का साधन मात्र। तत्समय शिक्षा का तात्पर्य उस अंतर्ज्योति से था जिससे मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो सके और वह धर्म के मार्ग पर चलकर जीवन के चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके। तत्कालीन समाज के भौतिक जगत पर ध्यान ना देने के कारण उसकी समस्त प्रवृतियां विकास की ओर उन्मुख न हो कर अंतर्जात के सृजन व निर्माण की ओर प्रेरित हो गई उसका अंतिम लक्ष्य ब्रह्म व अंतिम सत्ता पाना रहा।

यहां यह तथ्य द्रष्टव्य होता है कि उपनिषद कालीन भारत में धर्म का इतना बोलबाला था कि जीवन की समस्त क्रियाएं, आचार व्यवहार, चिंतन एवं मनन सब धर्म की परिधि में आते थे यही कारण था कि प्राचीन शिक्षा के साथ-साथ धर्म का बीजा रोपण हुआ। शिक्षा कि इस अनूठी परम्परा ने भारतीयों की आत्मा, शरीर, विचार तथा

मस्तिष्क को स्वस्थ निर्मल और उर्वर बनाया। लेकिन जैसे-जैसे समय का चक्र घूमता गया शिक्षा धर्म से दूर होने लगी मध्य और आधुनिक काल आते- आते धर्म एवं नैतिकता का ह्रास होने लगा।

आज समाज में मानवीय व नैतिक गुणों का लोप होते देख अनेक समाज सुधारक, अध्यात्मिक गुरुओं, व विद्वान शिक्षाविदों ने इस ओर अपने विचार रखें। जिसका परिणाम है कि आज विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से धर्म एवं नैतिकता की शिक्षा प्रदान की जा रही है।

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

बालक में कुछ शक्तियां जन्म के समय से ही रहती हैं। जिन्हें जन्मजात शक्तियां कहते हैं। बालक इन्हीं जन्मजात शक्तियों के आधार पर व्यवहार करता है उसका व्यवहार पशु के समान होता है। शिक्षा इन जन्मजात शक्तियों का, विकास करती है। शिक्षा बालकों को उनकी संस्कृति, रीति परंपरा, व्यवहार, नैतिक चरित्र, सामाजिकता, रूढ़िवादिता, बौद्धिक, मानसिक, शरीर, धार्मिक आदि गुणों का विकास करती है। छात्रों को इस योग्य बनाती है कि सांस्कृतिक विकास में योगदान दे सकें। यह प्रक्रिया केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव है जिससे मनुष्य अपने जीवन के महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है।

- **शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में**

विद्वानों एवं अनेक समाज शास्त्रियों का मत है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। क्योंकि जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सामाजिक अंतःक्रिया होती है तो वह एक दूसरे की भाषा, विचार, और आचरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं । मनुष्य की संपूर्ण सहृदयता एवं संस्कृत का विकास सामाजिक प्रक्रिया का ही परिणाम है। शिक्षा समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों से संबंधित होती है। अतः यह कहना उचित है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है ।

- **शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में**

शिक्षा सदैव गतिशील रहकर बालक को देश, काल और परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर अग्रसर करती है। समाज में निरंतर परिवर्तन के कारण शिक्षा के प्रारूप में भी परिवर्तन आता है तथा शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में भी निरंतर परिवर्तन होता रहता है।

- **शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया के रूप में**

शिक्षा शास्त्रियों का विचार है कि शिक्षा की प्रक्रिया में एक पक्ष प्रभावित करता तथा दूसरा पक्ष प्रभावित होता है। अतः शिक्षा द्विपक्षीय प्रक्रिया है।

- **शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया के   को रूप में**

शिक्षा सदैव गतिशील रहकर बालक को देश, काल और परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर अग्रसर करती है। समाज में निरंतर परिवर्तन के कारण शिक्षा के प्रारूप में भी परिवर्तन आता है तथा शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में भी निरंतर परिवर्तन होता रहता है।

- **शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया के रूप में**

शिक्षा शास्त्रियों का विचार है कि शिक्षा की प्रक्रिया में एक पक्ष प्रभावित करता तथा दूसरा पक्ष प्रभावित होता है। अतः शिक्षा द्विपक्षीय प्रक्रिया है।

जॉन एडम्स ने इस संबंध में कहां है - *"शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करता है जिससे कि उसके व्यवहार में परिवर्तन हो सके।"*

- **शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया के रूप में**

जॉन डीवी का विचार है कि शिक्षा की प्रक्रिया में अध्यापक और छात्रों के बीच अंतः क्रिया का कोई ना कोई आधार अवश्य होता है और वह आधार समाज है क्योंकि बालक का विकास समाज में रहकर ही होता है। डीवी ने बताया कि शिक्षा प्रक्रिया के दो रूप है-मनोवैज्ञानिक और सामाजिक। उन्होंने शिक्षा प्रक्रिया के तीन आधारभूत स्तंभ बताये है --

1.शिक्षक

2.बालक

3.पाठ्यक्रम

- **शिक्षा बहुमुखी प्रक्रिया के रूप में**

आधुनिक समय में शिक्षा का स्वरूप काफी बदलता हुआ दिखाई दे रहा है अब शिक्षा को केवल विद्यालय और पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। सामाजिक, आर्थिक क्रियाकलापों का भी शैक्षिक महत्व है विद्यालय के अतिरिक्त अन्य औपचारिक तथा निरौपचारिक साधनों को भी शिक्षा का साधन माना जाता है क्योंकि उनकी रूचि के आधार पर साधनों के चयन की स्वतंत्रता प्रदान की जा रही है। इसमें शिक्षा का प्रचलित स्वरूप, पूर्णकालिक शिक्षा, अंशकालिक शिक्षा, पत्राचार द्वारा शिक्षा एवं सूचना के स्रोतों का उपयोग करने वाले स्वशिक्षा के अनेक रूप भी सम्मिलित हैं।

1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। सूत्रकाल तथा लोकायत के बीच शिक्षा की सार्वजनिक प्रणाली के पश्चात हम बौद्ध कालीन शिक्षा को निरंतर भौतिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होते देखते हैं।

प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट भी थी। लेकिन कालांतर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ विदेशियों ने यहां की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया जिस अनुपात में होना चाहिए था। अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियां व समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियां व समस्याएं हमारे सामने हैं। 1850 तक भारत में गुरुकुल की प्रथा चलती आ रही थी परंतु मैकाले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन शिक्षा का अंत हो रहा था। भारत में कई गुरुकुल तोड़े गए और उनके स्थान पर कान्वेंट और पब्लिक स्कूल खोले गए।

1.1.2.1 प्राचीन काल में

भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि धर्म के लिए थी। भारत की शैक्षिक सांस्कृतिक परंपरा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है।

डॉक्टर अल्टेयर के अनुसार -"***वैदिक से लेकर अब तक भारतवासियों के लिए शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में यह हमारा मार्ग आलोकित करती है।"***

उस युग की यह मान्यता थी कि जिस प्रकार अंधकार को दूर करने का साधन प्रकाश है उसी प्रकार व्यक्ति के सब संशय और भ्रम को दूर करने का साधन शिक्षा है ऋग्वेद युग की शिक्षा का उद्देश्य था। तत्वसाक्षात्कार, ब्रह्मचर्य, तप, और योगाभ्यास से तत्व का साक्षात्कार करने वाले विप्र, वैधस, कवि, मुनि, मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे। विद्यालय, गुरुकुल, आचार्यकुल, गृहकुल इत्यादि नामों से विदित थे। प्राचीन भारत में किसी प्रकार की परीक्षा नहीं होती थी और ना ही कोई उपाधि दी जाती थी। भारतीय शिक्षा में आचार्य का स्थान बड़ा ही गौरव का था। आचार्य पारंगत, विद्वान, सदाचारी क्रियावान, निरभिमान होते थे। और विद्यार्थियों के कल्याण के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। अध्यापक छात्रों का चरित्र निर्माण, उनके लिए भोजन वस्त्र का प्रबंध, रूग्ण छात्रों की चिकित्सा शुश्रूषा करते थे। आचार्य धर्मबुद्धि से निशुल्क शिक्षा देते थे। विद्यार्थी ब्रह्ममूहूर्त में उठते थे। और प्रातः कृत्यों से निवृत्त होकर स्नान, संध्या, होम आदि कर लेते थे। इसके बाद अध्ययन में लग जाते थे। फिर भोजन करते थे। और

विश्राम के पश्चात आचार्य के पाठ ग्रहण करते थे। सांयकाल समिधा एकत्र कर ब्रह्मचारी संध्या और होम का अनुष्ठान करते थे। विद्यार्थियों के लिए भिक्षाटन कृत्य था।

1.1.2.2 मध्यकाल में

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। बादशाहों और अन्य शासकों के व्यक्तिगत रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी इस नाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गई साथ ही मकतबों और मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी मकतब प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहां प्रधानता धर्म शिक्षा ही दी जाती थी साथ ही साथ इतिहास,साहित्य,तर्कशास्त्र, व्याकरण, गणित, कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ तथा दरिद्र विद्यार्थी को छात्रवृत्ति मिलती थी। अध्यापन फ़ारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। दरिद्र विद्यार्थी को छात्रवृत्ति मिलती थी। अनाथालय का संचालन होता था। शिक्षा निशुल्क थी। राजकुमारों के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबंध था। राजव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि का ज्ञान गृहशिक्षक से प्राप्त होता था। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। छात्र और शिक्षकों का आपसी संबंध प्रेम का था। सादगी, सदाचार, विद्या प्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परंपरा थी। प्रश्नोत्तर व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे।

❖ मध्यकालीन शिक्षा की सात शीर्ष विशेषताएं

1. शिक्षा मुफ्त थी और फीस नहीं ली जाती थी क्योंकि शासक अल्पसंख्यक का उद्देश्य मुस्लिम संस्कृति और शिक्षा का प्रसार करना था। स्वाभाविक रूप से, शिक्षकों को अमीर, रईसों और व्यापारियों के लिए वित्त की तलाश थी जो आवश्यक वित्त प्रदान करने के लिए बहुत खुश थे।

3. जाति और सम्प्रदाय के भेद के बिना समाज के सभी वर्गों को शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध थीं। हिंदुओं ने विशेष रूप से मुगल काल के दौरान फारसी सीखना शुरू कर दिया, क्योंकि राज्य सेवा में प्रवेश करने के लिए इस भाषा को सीखना आवश्यक था।

4. समाज में शिक्षकों का बहुत सम्मान किया जाता था। हिंदू काल में शिक्षक और सिखाया के बीच मौजूद सौहार्दपूर्ण संबंध मध्यकाल के दौरान जारी रहे। आमतौर पर शिष्य विनम्रतापूर्वक शिक्षक के पैर छूते थे और बड़े आदर से बोलते थे। यदि किसी विशेष छात्र ने दुर्व्यवहार किया, तो उसे स्कूल से निष्कासित कर दिया गया।

बार्थोलोमो ने देखा है कि **"इन माध्यमों से उपदेशक को हमेशा वह सम्मान प्राप्त होता है जो उसके कारण होता है, जो शिष्य प्राप्त करते हैं और धीरे-धीरे उन नियमों के विरुद्ध हो जाते हैं जो इतने आभारी हैं।"**

5.गलत छात्रों को दंडित करने की प्रणाली मौजूद थी। शारीरिक सजा अक्सर कोरा या बेंत के साथ दी जाती थी। हालांकि, पढ़ाई की लापरवाही के लिए हल्की सजा भी दी गई थी। इनमें स्कूल के घंटों के बाद नजरबंदी या छात्रों को 10 या 15 बार पाठ लिखना शामिल है।

6. हिंदू काल में जो निगरानी प्रणाली अस्तित्व में थी, वह भी मुसलमानों द्वारा उपयोग की जाती रही। इस प्रणाली के अनुसार अग्रिम छात्रों ने अपने काम में शिक्षक की सहायता की।

7. मुस्लिम शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के अव्यक्त संकायों को विकसित करना था। उनके चरित्र को विकसित करने और उन्हें उन सभी से लैस करने का प्रयास किया गया जो उनकी सामग्री और नैतिक भलाई के लिए आवश्यक थे। इसलिए, छात्रों को धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान की गई।

1.1.2.3 आधुनिक काल में

भारत में आधुनिक काल में शिक्षा को दो भागों में बांट सकते हैं |

1.स्वतंत्रता के पूर्व शिक्षा।

2.स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा।

1.1.2.3.1 स्वतंत्रता के पूर्व शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्म प्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों डाली गई थी। इसाई विद्यालयों में शिक्षा धर्म के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाएं जाते थे। रविवार को विद्यालय बंद रहता था। 1780 में कलकत्ता में कलकत्ता मदरसा और 1791 में बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना कंपनी द्वारा की गई।

कंपनी की पूर्व नीत बदलने लगी कंपनी भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी। 1813 की आज्ञा पत्र के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया किस प्रकार की शिक्षा दी जाए इस पर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। अंत में लार्ड मैकाले के तर्क वितर्क और राजा राममोहन राय के समर्थन से प्रभावित 1835 में लॉर्ड बैंटिक ने निश्चय किया कि शिक्षा अंग्रेजी भाषा में तथा यूरोपीय साहित्य, इतिहास, विज्ञान के आधार पर दी जाएगी और साथ ही अपने घोषणापत्र में प्राच्य शिक्षा को चलने का आह्वान किया 1853 में शिक्षा की प्रगति की जाँच के लिए एक समिति बनी। इस समिति के निर्णय के आधार पर 1854

के वुड के घोषणा पत्र में संस्कृत, अरबी, और फारसी का ज्ञान आवश्यक समझा गया। 1882 में सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में प्राथमिक शिक्षा के लिए सुझाव दिए व्यवसाय शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, तथा स्त्री शिक्षा पर बल दिया। आयोग ने कहा कि माध्यमिक शिक्षा में अंग्रेजी शिक्षा दी जाय। बैडलोन ने छात्रों के चेहरे पर थप्पड़ से दंडित होने के कुछ उदाहरणों को दर्ज किया है, जिससे वह अपने पैर की उंगलियों पर बैठते हैं और अपने हाथों को अपनी जांघों ।बैडलोन ने छात्रों के चेहरे पर थप्पड़ से दंडित होने के कुछ उदाहरणों को दर्ज किया है, जिससे वह अपने पैर की उंगलियों पर बैठते हैं और अपने हाथों को अपनी जांघों ।

महात्मा गांधी की भारत को जो देन है। उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, **'बुनियादी तालीम'** तथा **'बेसिक शिक्षा'** के नामों से भी जाना जाता है। गांधीजी ने २३ अक्टूबर १९३७ को 'नयी तालीम' की योजना बनायी जिसे राष्ट्रव्यापी व्यावहारिक रूप दिया जाना था। उनके शैक्षिक विचार शिक्षाशास्त्रियों के तत्कालीन विचारों से मेल नहीं खाते, इसलिये प्रारम्भ में उनके विचारों का विरोध हुआ।

❖ वर्धा शिक्षा योजना

गांधीजी ने कहा था कि नयी तालीम का विचार भारत के लिए उनका अन्तिम एवं सर्वश्रेष्ठ योगदान है। गांधीजी के जीवन-पर्यन्त चले सत्य के अन्वेषण एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु सक्रिय प्रयोगों के माध्यम से लम्बे समय तक विचारों के गहन मंथन के परिणामस्वरूप नयी तालीम का दर्शन एवं प्रक्रिया का प्रादुर्भाव हुआ जो केवल भारतवर्ष ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को एक नयी दिशा देने में सक्षम था। परन्तु दुर्भाग्यवश इस सर्वोत्तम कल्याणकारी शिक्षा-प्रणाली का राष्ट्रीय स्तर पर भी समुचित प्रयोग नहीं हो पाया जिसके फलस्वरूप आज तक यह देश गांधीजी के सपनों के अनुरूप सार्थक और सही स्वराज प्राप्त करने में असमर्थ रहा। बल्कि इसके विपरीत आज तो आलम यह है कि शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से भारत पुनः पाश्चात्य साम्राज्यवाद के अधीन निरन्तर सरकता चला जा रहा है

❖ हंटर कमीशन प्रमुख बातें

1. प्राथमिक शिक्षा व्यवहारिक हो।
2. प्राथमिक शिक्षा देशी भाषाओं में हो।
3. शैक्षिक रूप से पिछड़े इलाकों में शिक्षा विभाग स्थापित हो।
4. धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन न दिया जाए।

5. बालिकाओं के लिए सरल पाठ्यक्रम व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हो।

6. अनुदान सहायता छात्र-शिक्षक की संख्या व आवश्यकता के अनुपात में दिया जाए।

7. देशी शिक्षा के पाठ्यक्रम में परिवर्तन न करके पूर्ववत चलने दिया जाए।

'हंटर का मत था - देशी पाठशालायें राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर सकती हैं। हंटर आयोग के सुझाव –

(1) प्राथमिक शिक्षा

(2) माध्यमिक शिक्षा

(3) उच्च शिक्षा

(4) सहायता अनुदान व्यवस्था

(5) स्त्री शिक्षा

(6) मुस्लिम शिक्षा

(7) आदिवासी व पर्वतीय जातियो की शिक्षा (लोक भाषा में शिक्षा)

(8) धार्मिक शिक्षा राजकीय विद्यालयो में नहीं।

(9) देशी पाठशालायें (पन्डितो और मौलवियो के विद्यालयो को मान्यता तथा अनुदान प्रदान किया जाय। (9) उच्च तथा निम्न सभी प्रकार के देशी विद्यालयों को सरकार प्रोत्साहन दे।

(10) विद्यालय के निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाए।

(11) इस आयोग के तहत दो विश्व विद्यालयों की स्थापना की गई ***पंजाब** 1882 ***इलाहाबाद** 1887 में।

1.1.2.3.2 स्वतंत्रता के बाद शिक्षा

15 अगस्त 1947 यानी देश को आजादी मिलने के बाद शिक्षा सम्बन्धी सुधारों के दृष्टिकोण से समय – समय पर कई शिक्षा आयोगों की नियुक्ति की गई। एवं उनके सुझावों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में सुधार एवं परिवर्तन किये गये। विश्वविद्यालय आयोग, माध्यमिक शिक्षा आयोग एवं भारतीय शिक्षा आयोग प्रमुख हैं।

- ❖ **राधाकृष्ण आयोग**

जिसे हम विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग भी कहते है भारत सरकार द्वारा नवम्बर 1948 ई० में भारतीय विश्वविद्यालयी शिक्षा की अवस्था पर रिपोर्ट देने के लिये नियुक्त किया गया था। यह आयोग 4 नवम्बर 1948 ई० को नियुक्त किया गया था। इस आयोग ने 25 अगस्त, 1949 ई० को अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को सौंप दी। डॉ. राधाकृष्णन इस आयोग के अध्यक्ष थे। इस लिये इसे राधाकृष्णन आयोग के रूप में जाना जाता है। यह स्वतंत्र भारत का पहला शिक्षा आयोग था। इसे विश्वविद्यालय आयोग भी कहा जाता है क्यूंकि इसकी नियुक्ति विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा व्यवस्था, संरचना की जाँच करना और तत्कालीन समस्याओं का पता लगाकर इस के सन्दर्भ में भारत सरकार को आवश्यक सझ्ुाव देना था। जाँच के विषय इस प्रकार थे…

- तत्कालीन विश्वविद्यालयों का अध्ययन करना और उनकी समस्याओ का पता लगाना।
- प्रशासन और वित्त के बारे में सुझाव देना।
- उच्च शिक्षा के लक्ष्यो को निर्धारित करना।
- उच्च शिक्षा के विषय में अपनी राय देना।
- उच्च शिक्षा के शिक्षण स्तर को बढ़ाना। विद्यार्थियों के कल्याण के लिए योजनाएं प्रस्तुत करना।
- विद्यार्थियों में उपस्थित अनुशासनहीनता का समाधान खोजना।
- उच्च शिक्षा के शिक्षकों की नियुक्ति, वेतनमान और सेवा शर्तो के बारे में सुझाव देना।
- विश्वविद्यालय शिक्षा के माध्यम अवधि और पाठ्यक्रम के बारे में सुझाव प्रस्तुत करना।
- राधाकृष्णन आयोग की मुख्य सिफारिशें :- आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा के सभी अंगो के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये और उन में सुधार के लिए ठोस सुझाव दिए जो इस प्रकार के है... १. शिक्षा के लक्ष्य : •

❖ राधाकृष्णन आयोग की सिफारिशें

- लोकतंत्र के लिए प्रशिक्षित करना
- आत्म-विश्वास के लिए प्रशिक्षण देना।
- वर्तमान और साथ ही अतीत की समझ विकसित करना।
- व्यावसायिक और पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान करना।
- ज्ञान के विकास के द्वारा जीवन जीने की सहज क्षमता को जगाना
- कुछ मूल्यों को विकसित करना जैसे- मन की निडरता, विवेक शक्ति और
- देश की अखंडता अपनी सांस्कृतिक विरासत के उत्थान के लिए विद्यार्थियों को इससे परिचित कराना।
- आयोग के अनुसार शिक्षकों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जाए- प्रोफेसर, पाठक, व्याख्याता, और प्रशिक्षक।

- योग्यता के आधार पर ही एक श्रेणी से दूसरे में पद्दोनति की जाए
- आयोग ने चारों श्रेनणयों के शिक्षकों के लिए उच्च वेतन और बेहतर सेवा शर्तो
- जैसे- भविष्य निधि, आवासीय आवास, काम के घंटे और छुट्टी आदि के लाभ की सिफारिश की।
- शिक्षण कार्य सप्ताह में 18 घंटे से अधिक नहीं दिया जाना चाहिए। • शिक्षकों के अध्ययन के लिए एक बार में एक वर्ष का और सम्पूर्ण सेवा काल में 3 वर्ष का अवकाश दिया जाना चाहिए।
- सेवा से अवकाश की उम्र 60 से बढ़ाकर 64 वर्ष कर दी गयी।
- विश्वविद्यालयों में 3000 से अधिक और उनसे सम्बंधित महाविद्यालयों में 1500 से अधिक विद्यार्थियों की संख्यां नहीं होनी चाहिए।

भारत सरकार ने 23 सितम्बर 1952 ई० को डॉ० लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की। उन्ही के नाम पर इसे मुदलियर आयोग कहा गया। आयोग ने पाठ्यचर्या में विविधता लाने, एक मध्यवर्ती स्तर जोड़ने, त्रिस्तरीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरू करने इत्यादि की सिफारिश की।

❖ माध्यमिक शिक्षा आयोग

संस्तुतियाँ-

(1) 4 या 5 वर्ष की प्राइमरी शिक्षा ,

(2) सेकण्डरी शिक्षा के दो भाग होना चाहिए।

(3) वस्तुनिष्ठ (MCQ) परीक्षण-पद्धति को अपनाया जाए।

(4) संख्यात्मक अंक देने के बजाय सांकेतिक अंक दिया जाए।

(5) उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक मूल विषय (core subject) रहे जो अनिवार्य रहे जैसे—गणित, सामान्य ज्ञान, कला, संगीत आदि।

❖ उद्देश्य -

1.भारत की तात्कालिन माध्यमिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करके उस पर प्रकाश डालना।

2.माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य संगठन एवं विषयवस्तु।

3.विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों का पारस्परिक संबंध।

4.माध्यमिक शिक्षा का प्राथमिक ,बेसिक तथा उच्च शिक्षा के संबंध में।

❖ **प्रसार की नीति**

1. माध्यमिक शिक्षा को व्यवसायिक बनाया जाए जिससे निम्न माध्यमिक स्तर 30% और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 50% छात्र व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकें।

2. माध्यमिक शिक्षा में अवसरों की समानता पर बल दिया जाए इसके लिए इस स्तर पर अधिकाधिक छात्रवृत्ति प्रदान करने की व्यवस्था की जाए।

3.लड़कियों अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों में माध्यमिक शिक्षा के विस्तार के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।

4. प्रतिभा के विकास के लिए वास्तविक रूप से प्रयास किया जाए।

5.अगले 20 वर्षों में माध्यमिक शिक्षा की संख्या को नियमित किया जाए इसके लिए माध्यमिक शिक्षा बालियों की स्थापना के लिए उपयुक्त योजनाएं बनाने माध्यमिक शिक्षा के शिक्षण अस्त्रों को ऊंचा उठाने तथा उपयुक्त एवं योग्य छात्रों के चुनाव पर बल दिया जाए।

6. प्रत्येक जिले में माध्यमिक शिक्षा के विस्तार के लिए योजनाएं बनाई जाए और उन्हें 10 वर्षों की अवधि में पूर्ण रूप से कार्य किया जाए।

7. समस्त नए विद्यालयों द्वारा आवश्यक शिक्षा को पूर्ण किया जाए और प्रचलित विद्यालयों के स्तर को उच्च बनाया जाए।

8. माध्यमिक विद्यालयों के लिए योग छात्र को चुना जाए।

9. स्कूलों में विज्ञान शिक्षा को सुदृढ़ किया जाए।

10. केंद्रीय सरकार द्वारा माध्यमिक विद्यालय को व्यवसायिक बनाने के लिए राज्य सरकार को विशेष अनुदान दिया जाए।

11.बालिकाओं की शिक्षा के विस्तार के लिए अगले 20 वर्षों में महत्वपूर्ण कदम उठाए जाएं।

भारतीय शिक्षा आयोग की संस्तुतियों के कार्यान्वयन के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्ताव 1986 ई० में पारित किया गया, 10+ 2+3 शैक्षिक ढाँचे की शुरुआत हुई, कार्यानुभव को स्कूल के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान मिला, अध्यापकों के वेतनमान तथा सेवा शर्तों में सुधार हुआ एवं शिक्षा के व्यवसायीकरण को बल मिला. इसके बाद शिक्षा में समानता अर्थात किसी जाति धर्म, वर्ग या लिंग के आधार पर भेदभाव न करने की व्यवस्था की

बात कहीं गई। वास्तव में व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा आधुनिक शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषता हैं। प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग वाले बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया हैं किन्तु भारत की जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ रही हैं उसे देखते हुए यह कहा जा सकता हैं कि शिक्षा की समुचित व्यवस्था केवल सरकार द्वारा किया जाना संभव नहीं हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के निजीकरण के प्रयास हुए हैं।

इस समय शिक्षा द्वारा उत्पादकता बढ़ाने सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकीकरण करने, भारत का आधुनिकरण करने तथा नैतिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के लिए आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में पारम्परिक एवं सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की अधिकता हैं। इसके स्थान पर आधुनिक एवं प्रायोगिक पाठ्यक्रम को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए, साथ ही इसे अधिक रोजगारोन्मुखी बनाएं जाने की भी जरूरत हैं।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा की बागडोर भारतीयों के हाथ में आ गई। शिक्षा में धार्मिक व आध्यात्मिकता का एकदम लोप हो गया था । इसलिए आजादी के बाद राधाकृष्णन आयोग (1948-49) माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (1956) कोठारी आयोग (1964) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) नई शिक्षा नीति(1986)के द्वारा भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए समय-समय पर सही दिशा देने के लिए गंभीर कोशिशें की गई। आयोग सिफारिशों को बड़ी तत्परता के साथ कार्यान्वित किया गया। जिससे उच्चशिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, तथा प्राथमिक शिक्षा में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा में प्रगति होने लगी। विश्व भारती, गुरकुल अरविंद आश्रम, जामिया इस्लामिया, विद्या भवन, वनस्थली विद्यापीठ, श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, इस्कॉन आदि आधुनिक भारतीय शिक्षा के विद्यालय और प्रयोग हैं ।

1.1.3 भारतीय शिक्षा की समस्याएं

आजाद भारत में वर्तमान में अगर सबसे ज्यादा प्रयोग किसी क्षेत्र में हो रहे हैं तो वह है शिक्षा क्षेत्र लेकिन उद्देश्य पर गहराई से चिंतन करें तो पाएंगे कि प्रयास सकारात्मक नही है। हर देश की अपनी संस्कृत, सामाजिक संरचना, आवश्यकता और भौगोलिक विशेषता होती है ।उस पर हम किसी अन्य व्यवस्था को थोपने का प्रयास करेंगे तो परिणाम विपरीत ही होंगे क्योंकि जहां अनुकूलता नहीं होती वहां प्रतिकूलता विद्यमान रहती है। शिक्षा के क्षेत्र में यही दो तो हम कर रहे है । हम अपनी गौरवमई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को हेय मानकर पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का अंधानुकरण कर रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षा का ह्रास दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा में निम्न समस्याएं हैं

1.1.3.1 शिक्षा का व्यवसायिकरण

शिक्षा वैसे तो ज्ञान का माध्यम है पशुता से मानवता में बदल दे वहीं शिक्षा है। पुरातन से हमारे देश व उसकी संस्कृति की पहचान ज्ञान व उसके सही प्रसार - प्रचार से ही रही है। दुनियाँ के कई अन्य देशों की भाँति हमने अपने ज्ञान का कभी दुरुपयोग नहीं किया। राजा और शासन व्यवस्था के साथ-साथ भारत की शिक्षा प्रणाली भी बदलती रही। आजादी से पूर्व अंग्रेजी शासन ने तो इस संबंध में हद ही कर दी।

अनेक संस्थाएं व व्यक्तित्व देश हित में प्रभावी शिक्षण संस्थाओं के लिए सामने आए और उसके लिए कुछ सीमा तक सफल भी हुए। इन से निकले अनेक छात्रों का कई क्षेत्रों में विश्व ने लोहा माना। आजादी के बाद भारती समाज ने अपने- अपने दायित्व एक दूसरे पर डालने आरंभ किये। कई बार एक दूसरे के कार्यों पर हस्तक्षेप किया। दायित्व तो इमानदारी से निभाया नहीं ऊपर से अंग्रेजों से प्रभावित शिक्षा व्यवस्था को अनावश्यक दिशा तो नहीं दे पाए अनावश्यक हस्तक्षेप करने की आदत अवश्य डाल ली। शिक्षक जिसका दायित्व बालक के अस्तित्व को बाहर लाकर देश और समाज के लिए उसके व्यक्तित्व का निर्माण करना था। आदर्श नागरिकों के गुण नैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित किया जाना था लेकिन उसकी जगह उससे भाँति भांति के काम लिए जाने लगे जनगणना, पशु गणना, टीकाकरण, दवा वितरण, मतदाता सूची, पल्स पोलियो, स्वच्छता , सड़क सुरक्षा, मध्यान भोजन आदि कार्यों को जबरजस्ती थोपा गया। शिक्षा में प्रत्येक स्तर पर अनावश्यक हस्तक्षेप, सरकारों द्वारा अपने हितों के अनुकूल पाठ्यक्रमों को लागू करना या करवाना , पुस्तकों के वितरण बिक्री में भारी कमीशन खोरी बार-बार बदलाव, नियमित व समय से युक्तियां ना करना कुछ राजनीतिक दलों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग मिलने से देश धीरे-धीरे शिक्षा के व्यवसायीकरण की ओर बढ़ता गया। पहले मोंटेसरी जैसे छोटे-छोटे निजी स्कूलों का खुलना आरंभ हुआ फिर धीरे धीरे उनका स्थान बड़ी-बड़ी गगनचुंबी इमारतों, वातानुकूलित संस्थानों, छात्रावासों ने ले लिया। निजी विद्यालयों की बाढ़ सी आ गई अच्छे- अच्छे डॉक्टर, राजनेताओं तथा व्यवसायियों ने अपने मूल धंधों को छोड़कर स्कूल खोल लिए। निम्न, माध्यम, उच्च, अधिक उच्च वर्ग के बच्चों के लिए एक लक्ष्मण रेखा बन गई माता पिता की पहचान ज्ञान संस्कार गुणों से नहीं विद्यालयों की फीस इमारतों सुख-सुविधाओं व बनावटीपन से होने लगी। ट्यूशन शौक बन गया।

1.1.3.2 शिक्षा में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास

हमारी प्राचीन भारती शिक्षा पद्धति गुरु केंद्रित थी। वहां गुरु का दर्जा ईश्वर से ऊपर था। गुरुकुल पद्धति में अध्ययन कर संसार में अपना नाम अमर करने वालों और जगत का उपकार करने वालों के सिर्फ नामों भर से एक विशाल पुस्तक की रचना हो सकती है इतिहास गवाह है कि उन्ही लोगों ने भारत को विश्वगुरु का दर्जा दिलवाया था। भारत को सदा से अपनी कला, संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म आदि की गौरवशाली परंपराओं पर गर्व रहा है परंतु आज पारस्परिक अविश्वास व आस्था हीनता के दशा में हमारी प्राचीन परंपरा एवं मूल्य धूमिल हो गए। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा, अस्तित्ववादी जीवन अनात्मपरक, नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण पर तर्क प्रधान चिंता करण, अतीत में विश्वास एवं 'स्वयं' में अनास्था था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गए

हैं। और इसी कारण हम अपने प्राचीन आदर्शों, मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक विरासत से उदासीन होते चले जा रहे हैं व उसके स्थान पर विदेशी चिंतन प्रणाली को प्रतिष्ठित कर रहे हैं जिससे मूल्यों का विघटन का क्षरण हो रहा है इस संकट की स्थिति को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय संस्था यूनेस्को ने भी मूल्य शिक्षा पर बल दिया है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी इस बात पर चिंता व्यक्त की गई है कि विद्यालय बच्चों में उचित मूल्यों का निर्माण करने में अक्षम है और इस बात पर बल दिया कि विद्यालयों को अपने इस उत्तरदायित्व को पूरा करना चाहिए। देश के अंदर अनेक सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं भी चल रही हैं जो मूल्यपरक शिक्षा देने में प्रयासरत हैं।

1.1.3.3 ब्रिटिश नीति का प्रभाव

अंग्रेजों के द्वारा भारत में शिक्षा के विकास की शुरुआत 1781 में वारेन हेस्टिंग्स के द्वारा कलकत्ता मदरसा की स्थापना से हुई। इसका उद्देश्य मुस्लिम कानूनों तथा इससे सम्बंधित अन्य विषयों की शिक्षा देना था। इसके उपरांत 1791 में जोनाथन डंकन के प्रयत्नों से बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य हिन्दू विधि एवं दर्शन का अध्ययन करना था | 1800 में लार्ड वैलेजली के द्वारा फोर्ट विलियम की स्थापना की गई , जहाँ अधिकारियों को विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा विभिन्न भारतीय रीति रिवाज़ों की शिक्षा दी जाती थी |
इन सब कॉलेजो में शिक्षा की पद्धति का ढांचा इस प्रकार तैयार किए गए की कंपनी को ऐसे शिक्षित भारतीय नियमित तौर पर उपलब्ध कराए जा सके जो शास्त्रीय व अन्य स्थानीय भाषा के ज्ञाता हो तथा कंपनी के क़ानूनी प्रशासन में उसे मदद कर सकें |

यह वही समय था जब प्रबुद्ध भारतीयों एवं मिशनरियों ने सरकार पर आधुनिक ,धर्मनिरपेक्ष ,एवं पाश्चात्य शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि —

प्रबुद्ध भारतीयों ने निष्कर्ष निकाला की पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से ही देश की सामाजिक ,राजनितिक व आर्थिक दुर्बलता दूर किया जा सकता है|

मिशनरियों ने यह निष्कर्ष निकाला की पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार से भारतीयों को अनेक परंपरागत धर्म में आस्था समाप्त हो जाएगी तथा वह ईसाई धर्म ग्रहण कर लेंगे|

- **1813 के चार्टर एक्ट से प्रशंसनीय शुरुआत**

इस एक्ट के द्वारा पहली बार भारत में स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहित करने तथा देश में आधुनिक विज्ञान के ज्ञान को प्रारम्भ एवं उन्नत करने जैसे उद्देश्यों को रखा गया| और इसके लिए कंपनी के द्वारा एक लाख रुपए की राशि स्वीकृत की गई |सरकार ने कलकत्ता, आगरा और बनारस में तीन संस्कृत कॉलेज स्थापित किए |

- **आंग्ल-प्राच्य विवाद**

लोक शिक्षा की सामान्य समिति में शिक्षा को लेकर दो मत थे –एक प्राच्य शिक्षा व दूसरे आंग्ल शिक्षा के समर्थक थे। गवर्नर जनरल की कार्यकारणी परिषद् के सदस्य लार्ड मैकाले ने आंग्ल शिक्षा का समर्थन किया।

लार्ड मैकाले का स्मरण पत्र –1835 में मैकाले ने कहा कि सरकार के सीमित संसाधनों के मद्देनज़र पाश्चात्य विज्ञान एवं साहित्य की शिक्षा के लिए माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा ही सर्वोत्तम है।

- सरकार ने स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना दिया गया |
- बड़े पैमाने पर स्कूलों और कॉलेजों कि स्थापना कि गई व जनसाधारण के शिक्षा की उपेक्षा की गई |

सरकार की योजना समाज के उच्च एवं मध्य वर्ग के एक तबके को शिक्षित कर एक ऐसी श्रेणी बनाना था जो रक्त एवं रंग से भारतीय हो पर अपने विचार नैतिक मापदंड, प्रज्ञा एवं प्रवृति से अंग्रेज हो ,और यह श्रेणी सरकार तथा जनसाधारण के बीच द्विभाषिये की भूमिका निभा सके |इस प्रकार पाश्चात्य विज्ञान तथा साहित्य का ज्ञान जनसाधारण तक पहुच जाएगा। इस सिद्धान्त को **विप्रेषण सिद्धान्त** के नाम से जाना गया ।

- **थॉमसन के प्रयास..**

✓ थॉमसन ने (1843 – 53 ई ०) ग्राम शिक्षा की एक विस्तृत योजना बनाई। अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देने वाले छोटे-छोटे स्कूलों को बंद कर दिया गया |

✓ एक शिक्षा विभाग का गठन किया गया |

✓ गॉव के स्कूल में कृषि विज्ञान तथा क्षेत्रमिती जैसे उपयोगी विषयों का अध्ययन प्रारम्भ किया गया | इस शिक्षा के लिए माध्यम देशी भाषा को चुना गया |

✓ इसका उद्देश्य नवगठित राजस्व एवं लोक निर्माण विभाग के लिए शिक्षित व्यक्ति उपलब्ध करना था |

- **चार्ल्स वुड डिस्पैच**

चार्ल्स वुड डिस्पैच जिसे भारतीय शिक्षा का Magna-Karta भी कहा जाता है ,भारत में शिक्षा के विकास से सम्बंधित पहला विस्तृत प्रस्ताव था |

इस डिस्पैच की प्रमुख सिफारिशें निम्न थी —

- जनसाधारण के शिक्षा का उत्तरदायित्व सरकार वहन करें।
- गावँ में देशी भाषाओं में प्राथमिक स्कूल ,जिला स्तर पर आंग्ल देशी भाषाई हाईस्कूल तथा बम्बई, कलकत्ता व मद्रास में विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए
- उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी तथा स्कूल शिक्षा का माध्यम देशी भाषा होनी चाहिए।

- स्त्री शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा पर बल दिया गया तथा तकनीकी विद्यालय एवं अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की सिफारिश की गई |

- निजी प्रत्यनों को प्रोत्साहित करने के लिए अनुदान सहायता की पद्धति चलाने की सिफारिश की गई|
- लोक शिक्षा विभाग की स्थापना की गई |
- शिक्षा के धर्म निरपेक्षता पर बल दिया गया |
- इसमें इस बात की घोषणा की गई की शिक्षा नीति का उद्देश्य पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार था।

1.1.3.4 पश्चिमी अंधानुकरण

प्राचीन काल में विज्ञान, संस्कृति और दर्शन के क्षेत्र में अपनी पैठ बना चुके भारत को विश्वगुरू की उपाधि से नवाजा जा चुका है। दुनियां भर के लोगों को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है। लेकिन अब परिस्थितियां पहले जैसी नहीं रहीं। क्योंकि अब भारत के पास दुनियां को सिखाने के लिए कुछ नहीं बचा, बल्कि अब तो आलम यह है कि हम स्वयं ही अपनी मौलिक परंपराओं और मान्यताओं को दरकिनार कर, पाश्चात्य रिवाजों और उनकी जीवनशैली को अपनाते जा रहे हैं। हालांकि किसी अन्य राष्ट्र से सीखना और उन्हें ग्रहण कर लेना कोई बुरी बात नहीं हैं लेकिन आधुनिकता के पथ पर चलते हुए इन रिवाजों को अपने भीतर समाविष्ट करने की यह प्रक्रिया किस हद तक हो, इसे लेकर अभी तक भारतीय लोगों की समझ विकसित नहीं हो पाई है।

भारत जैसा देश जो एक लंबे समय तक पश्चिमी राष्ट्र का उपनिवेश रहा है, उसके लिए विदेशी लोगों के आचरण और उनके तरीकों को अपनाना कोई नई बात नहीं है. इसकी ग्रहणशील प्रवृत्ति के कई उदाहरण हम पहले भी देख चुके हैं।

लेकिन कपड़े पहनने के ढंग और तौर-तरीकों में पाश्चात्य प्रभाव से शुरू हुआ यह सिलसिला अब भारत की संस्कृति और मौलिकता तक आ पहुंचा है। उल्लेखनीय है कि इन पाश्चात्य रीति-रिवाजों का सबसे ज्यादा प्रभाव देश का भविष्य कही जाने वाली युवा पीढ़ी पर पड़ा है। वह अब पूरी तरह विदेशी संस्कृति से ओत-प्रोत हो चुकी है।

हालांकि किसी भी परिस्थिति को देखने और समझने के दो नजरिए होते हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। हो सकता है कि पाश्चात्य देशों से भारत आए यह अत्याधुनिक रिवाज व्यक्ति को अपनी अलग पहचान और अस्तित्व साबित करने का एक मौका देते हों। लेकिन उन तौर-तरीके और रिवाजों को कहां तक जायज ठहराया जा सकता है जो भारतीय समाज की मौलिक विशेषता और उसकी सभ्यता पर गहरा आघात करते हों?

1.1.4 मूल्य शिक्षा के संबंध में विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझाव

शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न आयोगों ने सुझाव दिए ह जो निम्नलिखित है।

1.1.4.1 राधाकृष्णन आयोग (1948-49)

इस आयोग ने शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार करते हुए ऐसे शिक्षित नागरिक तैयार करने पर बल दिया। जो विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान कर सकें, प्रजातांत्रिक मूल्यों को स्थापित कर सके, सांस्कृतिक धरोहर व मूल्यों को बनाए रखें, नैतिक चरित्र व उच्च आदर्शों से युक्त हो राष्ट्रीय एकता व अनुशासन में सहायक हो तथा स्वयं को अंतरराष्ट्रीय सद्भावना व भाईचारे के लिए समर्पित कर सकें।

1.1.4.2 माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953)

इस आयोग ने सुझाव दिया की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास करना नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करना, व्यवसायिक कौशल का विकास करना है। व्यक्तित्व का विकास करना साथ ही नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य शिक्षा का विकास करना है।

1.1.4.3 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964-66)

कोठारी आयोग ने कहा है की शिक्षा का अधिकार इस ढंग से किया जाना चाहिए कि इससे राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े, आधुनिकरण की गति में तेजी आए तथा सामाजिक नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास हो।

कोठारी आयोग के अनुसार- ***" देश के आर्थिक विकास, सच्चे जनतंत्र का निर्माण, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने, मूल्यों को जीवित रखने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। शिक्षा राष्ट्र की संपन्नता एवं कल्याण की कुंजी है। अतः शिक्षा के सभी अंगो का पुनः सर्वेक्षण आवश्यक है।"***

1.1.4.4 नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

नई शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा का विशाल प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इन सभी प्रतिवेदनों में भारतीय करण की आवश्यकता पर अपनी संतुतियाँ प्रस्तुत की गई। और यह भी प्रस्ताव किया गया कि भारतीय शिक्षा का आधार भारतीयता जीवन दर्शन एवं भारतीयों की आकांक्षाओं को ही होना चाहिए। आयोग ने राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने के लिए निम्न सुझाव दिए-

राष्ट्रीय चेतना को और गहरी बनाने के लिए विशेष रूप से दो कार्यक्रम अपनाए जा सकते हैं -

(क) हमारी सांस्कृतिक विरासत का फिर से मूल्यांकन करना तथा उसे समझना।

(ख) हम जिस भविष्य की कामना करते हैं उसके प्रति दृढ़ प्रेरणा, पूर्ण निष्ठा को उत्पन्न किया जाए।

1.1.5 धर्म एवं शिक्षा

इस पूरे अस्तित्व को जिन अंतर्निहित नियमों द्वारा धारण किया गया है उसी को धर्म कहते हैं। धर्मानुसार शिक्षा का अर्थ है प्रत्येक को इस धर्म की अनुभूति कराना तथा उस पर आधारित व्यवहार का प्रशिक्षण प्रदान करना है। मानव जीवन आज विकास की उस चरम सीमा पर पहुंच चुका है जिसमें उसकी अहम वादी प्रवृत्ति तीव्रता से सामाजिक व्यवस्था को बाधा पहुंचाने लगी है। मानवीय व्यक्तित्व और क्रियाकलापों का संस्कारों के साथ संबंध टूट सा गया है। जीवन में व्याप्त अधार्मिकता और अनैतिकत प्रवृति का मूलभूत कारण यही है कि शिक्षा के साथ धर्म एवं नैतिकता को जोड़ा नहीं गया। नि:संदेह मानवतावादी धर्म पर आधारित नैतिक शिक्षा समय की मांग है।

1.1.5.1 प्राचीन काल में शिक्षा धर्म के अधीन

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक व औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केंद्रों का उल्लेख मिलता है। औपचारिक शिक्षा मंदिर, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से धर्मानुसार प्रदान की जाती थी। जबकि परिवार ,पुरोहित, पंडित, सन्यासी और त्योहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त की जाती थी। विभिन्न धर्म सूत्रों में लिखा है कि श्रेष्ठ गुरू माता ही थी। ऋषियों के आश्रम वनों में स्थित होते थे। जहां शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में दर्शन शास्त्र, धर्म शास्त्र के साथ-साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती थी। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य तथा मध्वाचार्य आदि के मठ प्रसिद्ध हैं। जहां मूल्य आधारित शिक्षा दी जाती थी। बौद्ध कालीन शिक्षा भी समाज उपयोगी व धर्म आधारित थी। बौद्ध मठों द्वारा शिक्षा सभी वर्ग के लोगों को प्रदान की जाती थी। महावीर और गौतम बुद्ध के संघ में नारियों को भी अनुमति थी। ये धर्म एवं दर्शन के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करती थीं। चाणक्य नीति के तीसरे अध्याय में दूसरे श्लोक के भाव द्वारा संस्कृत से प्राप्त शिक्षा का सामान्य स्वरूप परलक्षित होता है।

"आचार: कुलमाख्याति देशमाख्याति भाषणं

संभ्रम: स्नेहमांख्याति व पूर ख्याति भोजनं।।"

1.1.5.2 प्राचीन काल के पश्चात शिक्षा राजा के आधीन

समाज की उन्नति के लिए शिक्षा परम आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक समाज में शिक्षा की व्यवस्था करना प्राचीन युग से ही एक महत्वपूर्ण कार्य समझा गया है। शिक्षा के कार्य को निम्नलिखित साधनों में से किसी एक अथवा सभी के द्वारा संचालित किया जा सकता है।

(क) स्वलाभ के लिए

(ख) दान तथा धार्मिक संस्था द्वारा

(ग) राज्य द्वारा

प्राचीन काल में शिक्षा से राजा का कोई संबंध नहीं था। मध्यकाल में शिक्षा व्यवस्था दान व धार्मिक संख्याओं के द्वारा संस्थाओं के द्वारा हुई। इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्येक धार्मिक संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में राजा के हस्तक्षेप का डटकर विरोध किया परंतु जैसे-जैसे मानव में विवेक बढ़ता गया वैसे-वैसे शिक्षा राजा के अधीन हो गई। 17वीं शताब्दी आते-आते शिक्षा पूर्ण रूप से राजा के अधीन हो गई। जिसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा धर्म के आधार पर नहीं राजा के व्यक्तिगत विचारों के आधार पर दी जाने लगी। शिक्षा में मूल्य शिक्षा का स्तर गिरने लगा। परिणाम स्वरूप अनेक समाज सुधारकों द्वारा गुणात्मक शिक्षा के अनेक प्रयास परलक्षित है।

1.1.5.2 समाज सुधारकों का शैक्षिक योगदान

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय भारतीय भाषाई प्रेस के प्रवर्तक जागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रमुख नेता थे। धार्मिक व सामाजिक विकास के क्षेत्र में राजा राममोहन राय का नाम सबसे अग्रणी है। शिक्षा के माध्यम से राम मोहन राय ने तत्कालीन भारतीय समाज की कट्टरता रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वासों को दूर करके उसे आधुनिक बनाने का प्रयास किया।

भारतीय समाज सुधारकों में स्वामी विवेकानंद का नाम सर्वोपरि है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के आलोचक और व्यावहारिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि वर्तमान शिक्षा मनुष्य को जीवन संग्राम के लिए कटिबद्ध नहीं करती वरन उसे शक्तिहीन बनाती है। प्रचलित शिक्षा के स्थान पर स्वामी विवेकानंद जी भारत के लिए किस प्रकार की शिक्षा चाहते थे उनके शब्दों में उल्लेखनीय है ***" हमें उच्च शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता हो मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती हो, बुद्धि का विकास होता हो ,मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हो।"***

रविंद्र नाथ टैगोर ने शिक्षा में प्राचीन भारतीय आदर्श को स्थान दिया। यह आदर्श है 'सा विद्या या विमुक्तए' इस आदर्श के अनुसार शिक्षा मनुष्य को अध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे जीवन और मरण से मुक्ति प्रदान करती है।

टैगोर ने स्वयं लिखा है - ***"सच्ची शिक्षा संग्रह किए गए लाभप्रद ज्ञान के प्रत्येक अंग के प्रयोग करने में उस अंग के वास्तविक स्वरूप को जानने में और जीवन में जीवन के लिए सच्चे आश्रय का निर्माण करने में है।"***

टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास, मानसिक विकास, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास, राष्ट्रीयता का विकास ,अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास करना है।

गांधीजी साक्षरता या लिखने पढ़ने के साधारण ज्ञान को शिक्षा नहीं माना है ।उनके विचार से साक्षरता ना तो शिक्षा का अन्त है और ना शिक्षा का प्रारंभ। यह तो केवल स्त्री- पुरूष को शिक्षित करने का साधन है।

गांधी जी ने स्पष्ट रूप से कहा है - ***" सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों की आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं को उनके अंदर से बाहर प्रकट एवं उत्तेजित करती हैं"***

इनके अनुसार शिक्षा का उद्देश शारिरिक विकास नैतिक व चारित्रिक विकास तथा मानसिक विकास, जीवकोपार्जन, सांस्कृतिक उद्देश्य आदि का विकास करना है।

रामकृष्ण परमहंस जी आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक एवं मानव कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण अनमोल विचार रखे है।

अपने विचारों से इमानदार रहें। समझदार बने, अपने विचारों के अनुसार कार्य करें, आप निश्चित रूप से सफल होंगे। एक ईमानदार और सरल हृदय के साथ प्रार्थना करो, और आपकी प्रार्थना सुनी जाएगी। जिसने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया उस पर काम और लोभ के विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

ऐसे अनेक समाज सुधारक इस देश में जन्म लिए हैं जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान दिया और इन विचारकों के विचारों से प्रेरित होकर अनेक प्रकार की संस्थाओं एवं स्कूलों का अभ्युदय हुआ।

1.1.5.3 विभिन्न धार्मिक संस्थानों का अभ्युदय एवं उनका शैक्षिक योगदान

विभिन्न शिक्षण संस्थान ज्ञान के मंदिर है। मंदिर इसलिए कि ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ है ही नहीं।

"न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते।"

वेद कहता है कि ज्ञान और ब्रह्म पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी कहते हैं ब्रह्म ज्ञान मात्र है। ज्ञान का आधार विद्या है। शिक्षित व्यक्ति ही किसी देश की संस्कृति और सभ्यता है इस देश में ज्ञान का सम्मान इतना है कि वेदव्यास, वाल्मीकि व पाणिनि जैसे मनीषियों को भगवान मान लिया। क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है। जीवन तथा ईश्वर में आस्था पैदा करता है।

हमारे अध्यात्म के चार भाग है - आत्मा, मन, बुद्धि ,और शरीर। शरीर और बुद्धि शिक्षा में तथा आत्मा और मन धर्म के विषय बन गए। शिक्षा धर्मनिरपेक्ष हो गई। तब व्यक्ति स्वधर्म की पहचान कहां सीखेगा? शिक्षा के मूल धरातल पर आधिदैविक आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक तो खो ही गए, व्यक्तित्व विकास पीछे छूट गया। योग - क्षेम की परिभाषा ही बदल गई। ज्ञान छूट गया, विज्ञान रह गया। ब्रह्म छूट गया, माया रह गई। सम छूट गया, कृति रह गई। यानि संस्कृति खंड खंड हो गई। वसुधैव कुटुंबकम निजी स्वार्थ में बदल गया।

त्रेता और द्वापर में राम और कृष्ण ज्ञान प्राप्त के लिए वाल्मीकि एवं संदीपनी के आश्रम में जाते थे। गुरुकुल समाज से मिली दीक्षा पर आधारित थे। गुरुकुल में पात्रता के आधार पर शिक्षा दी जाती थी। समय परिवर्तन के साथ ही द्वापर बीत गया।

शिक्षा में कुछ काल तक धर्म की भूमिका बढ़ी लेकिन समय बीतेते अंग्रेजों का आगमन हुआ और अंग्रेजों ने नई व्यवस्था बनाई। इस व्यवस्था के अनुसार न शिष्य गुरु के घर जाने लगे न ही गुरु शिष्य के। स्कूल खड़े हो गए। विषय तय हो गए। वेद के 'गुरु 'और 'अंतेवासी' शब्द विदा हो गए।

भारतीय पारंपरिक संस्कृति विरासत को जागृत करने के लिए तथा प्राचीन शिक्षण पद्धति को लागू करने के लिए देश के अंदर विभिन्न धार्मिक संस्थाओं का अभ्युदय हुआ। ये संस्थाएं भारतीय संस्कृति को बनाए रखने के लिए व तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रही है। उदाहरणार्थ श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, इस्कॉन, विद्या भारती, सरस्वती विद्या मंदिर, रामकृष्ण परमहंस शैक्षिक संस्थान, बिहार योग विद्यालय, अज़ीम प्रेम जी फाउंडेशन आदि प्रमुख हैं।

1.1.5.3.1 अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

एक गैर-लाभकारी मानित विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय २०१० में कर्नाटक विधान मण्डल के अज़ीम प्रेमजी अधिनियम के तहत स्थापित किया गया था।

उद्देश्य

इस विश्वविद्याल का मिशन शिक्षा, अनुसंधान, वकालत आदि को और प्रभावीशाली बनाना है। अज़ीम प्रेमजी फाऊंडेशन इस विश्वविद्यालय का प्रयोजक है। इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अज़ीम प्रेमजी है और कुलपति है अनुराग बेहरा है।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का ध्येय

एक न्यायसंगत, मानवीय और टिकाऊ समाज की दिशा में कार्य करें।

प्रकार	-	निजी		
स्थापना	-	2014 कुलाधिपति	-	अज़ीम प्रेमजी।
उपकुलपति	-	अनुराग बहार		
शैक्षिक कर्मचारी	-	120		
स्थान	-	बंगलौर, कर्नाटक		

1.1.5.3.2 चिन्मय मिशन आश्रम

सन् १९५३ में स्थापित एक आध्यात्मिक, शैक्षिक तथा धार्मिक संस्था है। इसका परिचालन सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट द्वारा होता है। इसकी स्थापना स्वामी चिन्मयानंद के शिष्यों द्वारा स्वामी जी द्वारा किये जा रहे कार्यों को संगठित स्वरूप प्रदान करने के लिये की गयी थी। इस समय भारत एवं विश्व के अन्य भागों में इसके ३०० से अधिक केंद्र चल रहे हैं।

चिन्मय मिशन की गतिविधियाँ

- **वेदान्त प्रशिक्षण**

हिन्दू धर्म का मुख्य दर्शन वेदान्त है। जैसे भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान आदि बाह्यजगत् के भौतिक विज्ञान है वैसे ही वेदान्त आन्तरिक जगत् का विज्ञान है। यह जीवन का विज्ञान है। मानव निर्माण में सहायक वेदान्त का ज्ञान चिन्मय मिशन ज्ञानयज्ञ, आध्यात्मिक शिविर, मिशन केन्द्रों पर नियमित कक्षायें, सवाध्याय मण्डल, पत्राचार पाठ्यक्रम, ई मेल वेदान्त, वेदान्त पाठ्यक्रम के द्वारा देता है।

❖ बाल विहार

स्वामी चिन्मयानन्द जी ने एक बार कहा था "बच्चे ज्ञान से भरने के लिए खाली पात्र नहीं, वे तो प्रज्वलित करने के लिए दीपक है।" बाल विहार में पाँच से पन्द्रह साल के बच्चे सप्ताह में एक बार मिलते हैं। प्रशिक्षित सेवक उनकी बैठक मिशन सेंटर या अपने घर में लगाते हैं। वहाँ बच्चों को प्रेमपूर्ण वातावरण में भजन गाकर, शास्त्रों का पाठ कराकर, पुराणों की कहानियाँ सुनाकर तथा अन्य रुचिकर साधनों से सदाचार और संस्कृति की शिक्षा दी जाती है। भारत तथा अन्य देशों में सैकड़ों बाल विहार चिन्मय मिशन केन्द्रों पर चल रहे हैं।

❖ चिन्मय युवा केन्द्र

चिन्मय मिशन के युवा संवर्ग का नाम चिन्मय युवा केन्द्र है। इसमे 16 से 28 वर्ष के बच्चे भाग लेते हैं। इसका उद्देश्य है, " सक्रिय आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा युवा शक्ति को सन्मार्ग में लगाना"। इसके लिए युवकों की साप्ताहिक कक्षायें लगती हैं जहाँ उन्हें शास्त्र अध्ययन के द्वारा अपनी निहित शक्ति का ज्ञान कराया जाता है। चिन्मय युवा केन्द्र को संक्षेप में "चिक" कहते है।

❖ सेन्ट्रल चिन्मय वानप्रस्थ संस्थान

संक्षेप में इसे "सिसिभिएस" कहते है। यह चिन्मय मिशन के वरिष्ठ नागरिकों का संवर्ग है। इसके अन्तर्गत 60 वर्ष से अधिक आयु के स्त्री - पुरुष संगठित हुए हैं। "सिसिभिएस" वरिष्ठ नागरिकों को आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा देता है और उसे प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाता है। वह उन्हें समाज पर निर्भर न रहने की प्रेरणा देता है।

❖ देवी मंडल

यह संवर्ग केवल महिलाओं के लिए है। वे सप्ताह में एक बार किसी स्थान पर मिलकर शास्त्रों का अध्ययन करती हैं, भजन गाती हैं तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम करती हैं। देवी मण्ड़ल महिलाओं को ऐसा अनुकूल अवसर भी प्रदान करता है जहाँ वे अपनी समस्यायें स्पष्ट रूप से व्यक्त कर उनके समाधान पर विचार करती हैं।

❖ भजन मंडल

यह संवर्ग केवल भक्ति को प्रधानता देता है। इसके सदस्य सप्ताह में एक बार मिलकर वैदिक पाठ और भजन करते हैं। इसमें सभी वर्ग के स्त्री पुरुष भाग ले सकते हैं।

❖ विद्यालय और महाविद्यालय

चिन्मय मिशन के विद्यालय या महाविद्यालय कुछ भिन्न प्रकार का हैं। इसमें अन्य विषयों के साथ चिन्मय विजन प्रोग्राम भी जोड़ा गया है। यह प्रोग्राम चिन्मय मिशन ने तैयार किया है। यह इतना अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है कि मिशन के विद्यालयों के अतिरिक्त भी 500 बाहरी विद्यालयों में इसे स्वीकार कर लागू किया गया है।

1.1.5.3.3 बिहार योग विद्यालय

योग से सम्बन्धित शिक्षण-प्रशिक्षण का अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय है। यह बिहार के मुंगेर नगर में गंगा नदी के किनारे स्थित है। यह विद्यालय 'गंगा दर्शन' के लिए प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना सन् १९६४ में स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने अपने गुरु स्वामी शिवानन्द की इच्छानुसार कोविश्व को योग की प्राचीन विद्या की शिक्षा देने के निमित्त की थी।

बिहार योग विद्यालय योग प्रशिक्षण प्रदान करने वाली एक दातव्य एवं शैक्षणिक संस्था है। आज यह विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय है इसके 200 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय एवं सैकड़ों राष्ट्रीय योग एवं आध्यात्मिक केन्द्र है। इसे मानद विश्वविद्यालय (डीम्ड यूनिवर्सिटी) का दर्जा दिया गया है। वर्तमान में गुरुकुल शैली में यहाँ चातुर्मासिक योग सर्टिफिकेट कोर्स का संचालन होता है।

यह संस्था योग दर्शन, योग मनोविज्ञान, अप्लाइड योग एवं पर्यावरण योग विज्ञान में उच्च अध्ययन के लिए एक वर्ष एवं दो वर्ष का कोर्स कराती है। यहां योग शोध संस्थान का एक वृहद पुस्तकालय भी है। इसमें विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी अध्ययन करने आते हैं। बाद में वे अपने-अपने देश में जाकर योग केंद्र भी चलाते हैं।

1.1.5.3.4 रामकृष्ण मिशन

सिद्धांत आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च। (स्वयं के मोक्ष के लिए तथा जगत के हित के लिए)

स्थापना	-	1 मई 1896; 124 वर्ष पहले कोलकाता, भारत
संस्थापक	-	स्वामी विवेकानन्द
प्रकार	-	धार्मिक संगठन
उद्देश्य	-	शैक्षणिक, परमार्थिक, धार्मिक अध्ययन, आध्यात्मिकता
मुख्यालय	-	बेलूड़ मठ, पश्चिम बंगाल, भारत
स्थान	-	205 Branch Centres
निर्देशांक	-	288°13′E / 22.37°N 88.21°E
सेवाकृत क्षेत्र।	-	सम्पूर्ण विश्व
अध्यक्ष	-	स्वामी स्मरणानन्द
सम्बन्धन	-	नव-वेदान्त

रामकृष्ण मिशन की स्थापना १ मई सन् १८९७ को रामकृष्ण परमहंस के परम् शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने की। इसका मुख्यालय कोलकाता के निकट बेलुड़ में है। इस मिशन की स्थापना के केंद्र में वेदान्त दर्शन का प्रचार-प्रसार है। रामकृष्ण मिशन दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्म योग मानता है जो कि हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।

रामकृष्ण मिशन का ध्येयवाक्य है - आत्मनो मोक्षार्थं जगद् हिताय च (अपने मोक्ष और संसार के हित के लिये) रामकृष्ण मिशन को भारत सरकार द्वारा १९९६ में डॉ० आम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार से और १९९८ में गाँधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

1.1.5.3.5 अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ या इस्कॉन

कृष्ण भक्ति में लीन इस अंतरराष्ट्रीय सोसायटी की स्थापना श्रीकृष्णकृपा श्रीमूर्ति श्री अभयचरणारविन्द भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपादजी ने सन् १९६६ में न्यू यॉर्क सिटी में की थी। गुरू भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी ने प्रभुपाद महाराज से कहा तुम युवा हो, तेजस्वी हो, कृष्ण भक्ति का विदेश में प्रचार-प्रसार करों। आदेश का पालन करने के लिए उन्होंने ५९ वर्ष की आयु में संन्यास ले लिया और गुरु आज्ञा पूर्ण करने का प्रयास करने लगे। अथक प्रयासों के बाद सत्तर वर्ष की आयु में न्यूयॉर्क में कृष्णभवनामृत संघ की स्थापना की। न्यूयॉर्क से प्रारंभ हुई कृष्ण भक्ति की निर्मल धारा शीघ्र ही विश्व के कोने-कोने में बहने लगी। कई देश हरे रामा-हरे कृष्णा के पावन भजन से गुंजायमान होने लगे।

अपने साधारण नियम और सभी जाति-धर्म के प्रति समभाव के चलते इस मंदिर के अनुयायीयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। हर वह व्यक्ति जो कृष्ण में लीन होना चाहता है, उनका यह मंदिर स्वागत करता है। स्वामी प्रभुपादजी के अथक प्रयासों के कारण दस वर्ष के अल्प समय में ही समूचे विश्व में १०८ मंदिरों का निर्माण हो चुका था। इस समय इस्कॉन समूह के लगभग ४०० से अधिक मंदिरों की स्थापना हो चुकी है।
भारत से बाहर विदेशों में हजारों महिलाओं को साड़ी पहने चंदन की बिंदी लगाए व पुरुषों को धोती कुर्ता और गले में तुलसी की माला पहने देखा जा सकता है। लाखों ने मांसाहार तो क्या चाय, कॉफी, प्याज, लहसुन जैसे तामसी पदार्थों का सेवन छोड़कर शाकाहार शुरू कर दिया है। वे लगातार 'हरे राम-हरे कृष्ण' का कीर्तन भी करते रहते हैं। इस्कॉन ने पश्चिमी देशों में अनेक भव्य मन्दिर व विद्यालय बनवाये हैं। इस्कॉन के अनुयायी विश्व में गीता एवं हिन्दू धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हैं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास, ज्ञान एवं कला कौशल, सांस्कृतिक मूल्य एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है।

"शिक्षा देश की रीढ़ है जिस प्रकार विकृत रीड से स्वस्थ नहीं कहला सकता है ठीक उसी प्रकार विकृत शिक्षा व्यवस्था से देश का निर्माण नहीं हो सकता।"

यदि प्रारंभ से ही विद्यार्थियों को उनकी रुचि, क्षमता, बौद्धिक अभिक्षमता, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के आधार पर शैक्षिक प्रोत्साहन दिया जाए तो उनका व्यक्तित्व निखरेगा।

हमारे देश में विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थायें चल रही है जिनकी शिक्षा व्यवस्था में भिन्नता दिखाई देती है। श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट में विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही नैतिक मूल्यों, संस्कार, राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षित किया जाता है।

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की स्थापना का लक्ष्य भारत की पारम्परिक शिक्षा को बनाये रखने तथा बालक में संस्कारिक व नैतिक मूल्यों के साथसाथ श्रेष्ठ प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का है।

इन सब कारणों को दृष्टिगत रखते हुए इस संस्थान की शिक्षा से सम्बंधित नियम-कानून, विद्यालय वातावरण, शैक्षिक विचारों, पाठ्यक्रम व भौतिक स्वरूप को जानने के लिए शोधकर्ता ने इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य के लिए जिस समस्या का चुनाव किया गया है उसका शीर्षक इस प्रकार है--

"शिक्षा में अभिनव प्रयोग : श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट"

1.4 अध्ययन का औचित्य

प्राचीन काल से ही प्रकृति के वातावरण में धार्मिक सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जाती रही हैं। लेकिन समय बीतते शिक्षा राजाओं के अधीन हो जाने के कारण इन मूल्यों का ह्रास होने लगा। मध्यकाल और आधुनिक काल आते-आते इन मूल्यों का पाठ्यक्रम में उचित स्थान न दिया जाने लगा। इस कारण से बालक के व्यवहार, आचरण एवं नैतिकता की भावना का ह्रास होने लगा। केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है शिक्षा वह है जो ज्ञान के साथ-साथ समाज, राष्ट्र, धार्मिक, व सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण करें। इन्हीं आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए बहुत से समाज सुधारकों ने इस ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया और विभिन्न

प्रकार की संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा को धर्म व नैतिक मूल्य से जोड़ने के लिए प्रयास जारी किये। उपरोक्त मानदंडों पर परिचर्चा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोधार्थी द्वारा चुनी गई समस्या वर्तमान परिस्थितियों में निश्चित रूप से उचित एवं मौलिक सिद्ध होगी।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

❖ शिक्षा

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत कुछ ना कुछ सीखता रहता है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। ऐसी शिक्षा किसी विशेष व्यक्ति, समय, स्थान अथवा देश तक सीमित नहीं रहती आपितु जिसके भी संपर्क में आकर बालक जो कुछ भी सीखता है वह शिक्षा के अंतर्गत आता है।

शिक्षा विश्व के प्रत्येक समाज में निरंतर चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मनुष्य की समस्त शक्तियों ज्ञान व कला कौशल का विकास करते हुए उसके विचारों व आचरण संबंधी व्यवहार में समाज हितेषी परिवर्तन लाना है जिससे वह सभ्य, सुसंस्कृत, एवं योग्य नागरिक बनकर स्वयं व समाज दोनों का निरंतर विकास करें।

❖ अभिनव प्रयोग

सीखने की प्रक्रिया मनुष्यों के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक विकासक्रम का एक निर्धारक तत्व है। ज्ञात के प्रसार एवं अज्ञात के प्रति अनुसंधानात्मक अभिरुचि के विकास में सामाहित किया जा सकता है। 20वीं सदी तक के सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास की गति इतनी तीव्र नही थी कि पारंपरिक शिक्षण की प्रणालियां और व्यवस्थाएं उन्हें संभाल सके। परंतु 21वीं सदी ने शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तकनीकि, प्रविधियों, प्रणालियों एवं व्यवस्थाओं ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। सीखने की गति वृद्धि के लिए अत्यंत कारगर उपाय के रूप में कंप्यूटर स्लाइड शो, फ्लैश फिल्मों, गूगल साइटों व स्मार्ट कक्षाओं आदि का विकास कर लिया है। आज शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की नवीन शिक्षण पद्धतियों विधियों एवं सिद्धांत ने बालक के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं इसलिए कहा जा सकता है कि शिक्षा में विभिन्न नवीन तकनीकी शिक्षण सामग्री, प्रविधियों, अवधारणाओं के के साथ-साथ योग, अध्यात्मिक, मानवीय व जीवन मूल्यों का प्रयोग ही अभिनव प्रयोग है।

❖ श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर

जैसा कि नाम से पता चलता है यह सीखने का मंदिर है। जहां ज्ञान पूजनीय है। यह संस्था' विद्या ददाति पूर्णावतं' में विश्वास करता है। इसका अर्थ है शिक्षा पूर्णता लाता है। यह संस्था एक ज्ञान पूर्ण माहौल वाले ज्ञान केंद्रों के

प्रतीक हैं। यहां प्रत्येक बच्चा पूरी तरह से शैक्षणिक उत्कृष्टता और मानवीय मूल्यों के साथ खिलता है। इस संस्था के संस्थापक गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी शिक्षा के 5 तत्व बताएं है -

अवधारणा पृथ्वी के तरह ठोस।

दृष्टिकोण पानी की तरह जो कंटेनर का आकार लेता है।

सूचना जो हमारे चारों ओर वायु जैसे सभी स्रोतों से प्राप्त करने के लिए तत्पर है।

कल्पना जो अंतरिक्ष की तरह मन में अग्नि और स्वतंत्रता से उत्साहित है।"

इस संस्था का एक शैक्षणिक परिषद है जिसमें शिक्षाविदों का समावेश है। इन शिक्षाविदों ने ऐसे पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाई है जो बालक नवाचारी अवधारणा एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करती है। इस संस्था के कार्यप्रणाली के अनुसार पाठ्यक्रम तभी प्रभावी होता है जब इसे सही तरीके से लागू किया जाए हमारा दृष्टिकोण सरल, बाल केंद्रित व अनुभवात्मक है।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

* श्री श्री रवि शंकर विद्या मंदिर के स्वरूप का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के शैक्षिक विचारों के प्रभावों का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के शैक्षिक क्रियाकलापों का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के भौतिक स्वरूपों का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के गुरु शिष्य संबंध व अनुशासन का अध्ययन करना।

* श्री श्री रविशंकर के सामाजिक कार्यों का अध्ययन।

1.7 अध्ययन का सीमांकन

प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है। उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते हैं। प्रस्तावित शोध की निम्न सीमाएं हैं-

* प्रस्तावित शोध श्री श्री रविशंकर द्वारा संचालित श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर नोएडा तक ही सीमित है।

* प्रस्तावित शोध में श्री श्री रविशंकर द्वारा शिक्षा में दिए योगदान को सम्मिलित किया जाएगा।

* प्रस्तावित शोध श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के क्रियाकलापों व भौतिक सुविधाओं को सम्मिलित किया जाएगा।

* श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर के गुरु - शिष्य संबंध, अनुशासन एवं वित्त व्यवस्था को सम्मिलित किया जाएगा।

*श्री श्री रविशंकर जी का द्वारा सामाजिक क्षेत्र में किए गए प्रयासों को सम्मिलित किया जाएगा।

1.8 शोध विधि

आधुनिक एक में नवीन समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इसके कारण सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र सर्वेक्षण का महत्व बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार के शोध विधि का प्रयोग किसी संबंध की खोज करने अथवा शैक्षिक व सामाजिक पहलुओं के अध्ययन हेतु प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तावित शोध में शोधकर्ता ने अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने हेतु शोध की प्रकृति को देखते हुए विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि इसके अंतर्गत वर्तमान की घटनाओं, तथ्यों तथा संबंधों के अध्ययन को अधिक बल दिया जाता है। और यह भी पता लगाया जाता है कि उसका वर्तमान स्वरूप कैसा है?

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्राचीन काल से ही शिक्षा प्रकृति के वातावरण में धार्मिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर दी जाती थी। मध्य और आधुनिक काल में शिक्षा में नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होने से बालकों में सामाजिक एवं मानवीयता के गुण फीके पड़ने लगे। यदि हमें सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करनी है तो शिक्षा को नवीन प्रयोगों के साथ - साथ पारंपरिक शिक्षा के साथ जोड़ना अति आवश्यक है। जब तक बालक के अंदर मानवीय व नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा वह समाज व राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। आज आधुनिक युग में इन मूल्यों की आवश्यकता को देखते हुए अनेक समाज सुधारकों व आयोगों आदि ने मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपने - अपने विचार प्रस्तुत किए है। अनेक समाज सुधारक देश के अंदर विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से जीवन मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य व नैतिक गुणों के साथ-साथ नवीन तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

राधाकृष्णन आयोग (1948-49)ने सांस्कृतिक व मूल्य परक शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया है। आयोग ने निम्न सुझाव दिए है -

* बालक में वर्तमान के साथ ही अतीत की समझ विकसित करना

* ज्ञान के विकास के द्वारा जीवन जीने की सहज क्षमता को जगाना

* कुछ मूल मूल्यों को विकसित करना जैसे मन की निडरता, विवेक शक्ति आदि।

* अपनी सांस्कृतिक विरासत के उत्थान के लिए विद्यार्थियों को इससे से परिचित कराना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति(1968) आजादी के बाद के इतिहास में एक अहम कदम थी। इस नीति का उद्देश्य राष्ट्र के प्रगति को बढ़ाना तथा सामान्य नागरिकता व संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करना था। उसमें शिक्षा प्रणाली के सर्वांगीण पुनर्निर्माण तथा हर स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता को ऊंचा उठाने पर जोर दिया गया था। साथ ही इस शिक्षा नीति में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर नैतिक मूल्यों को विकसित करने तथा शिक्षा और जीवन में गहरा रिश्ता कायम करने रखने पर भी ध्यान दिया गया था।

पाश्चात्य विचारकों में प्लेटो नैतिकता के विकास के प्रबल समर्थक थे उनके अनुसार नैतिकता समस्त शिक्षा योजना का मेरुदंड है। नैतिकता से मनुष्य में सौंदर्य, न्याय तथा प्रेम का समावेश होता है। प्लेटो ने संपूर्ण पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया था।

(क) शारीरिक उन्नयन

(ख) विद्या संस्कार

(ग) संगीत की शिक्षा

वे सत्यम शिवम सुंदरम में आस्था रखते थे।

गांधीजी भी नैतिक सांस्कृतिक व चारित्रिक विकास के प्रबल समर्थक थे।

उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है- *"मैंने सदैव हृदय की संस्कृत अथवा चारित्रिक निर्माण को प्रथम स्थान दिया है।तथा चरित्र निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है।"*

एक उत्तम चरित्र में वे सत्य, अहिंसा, निर्भयता,ब्रह्मचारी, अस्वाद, अस्तेय और अपरिग्रह आदि गुणों का होना आवश्यक समझते थे।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से संस्था द्वारा संचालित शैक्षिक क्रियाविधि, उनके विचार, उनकी भौतिक स्वरूप सांस्कृतिक क्रियाकलापों व दैनिक दिनचर्या के बारे में गहन अध्ययन कर बालकों को सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा प्रदान की जा सकती है। जो राष्ट्रीय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

द्वितीय अध्याय

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययन

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

अध्याय द्वितीय- संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

संबंधित साहित्य का अध्ययन शोध का अभिन्न अंग होता है। यह किसी शोधकर्ता के लिए समस्या विशेष के मूल में पहुंचने का महत्वपूर्ण साधन तथा अनुसंधान का प्राथमिक आधार है। शोध प्रबंध की वास्तविक योजना एवं उसके संचालन से पूर्व शोधकर्ता समस्या से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन इसलिए करता है क्योंकि यह उसे अनावश्यक पुनरावृति से बचाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता का शोध विषय शिक्षा में अभिनव प्रयोग श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट है। उक्त समस्या में शोधकर्ता को श्री श्री रविशंकर के शैक्षिक विचारों, प्रभावों तथा किसी एक विद्या मंदिर के भौतिक स्वरूपों का अध्ययन करना है। परंतु समस्या से संबंधित शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए संबंधित साहित्य सर्वेक्षण का करना नितांत आवश्यक है। शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से संबंधित उपर्युक्त निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक जिसकी आवश्यकता को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है ।

* संबंधित साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा शोधकर्ता को अपने शोध कार्य की स्पष्ट पृष्ठभूमि प्राप्त होती है तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धांतों एवं अवधारणाओं को समझने में सहायता मिलती है।

* प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता शिक्षा में अभिनव प्रयोग श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट पर अध्ययन कर रहा है अतः उसे यह जानना नितांत आवश्यक है कि इस क्षेत्र में कितने कार्य हो चुके हैं तथा उस कार्य की प्रकृति क्या है? जो कि संबंधित अध्ययन द्वारा ही संभव है।

* इसके द्वारा समस्या का परिभाषीकरण, और अवधारणाओं व सीमांकन के निर्माण में सहायता मिलती है।

* संबंधित साहित्य सर्वेक्षण की सहायता से प्राप्त निष्कर्षों के विश्लेषण की सोच विकसित हो।

2.2 शोध समस्या से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन

तिवारी शिवाकांत (2002) "बुंदेलखंड क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों की शैक्षिक योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन" किया निष्कर्ष स्वरुप उन्होंने पाया कि

- मिशनरी विद्यालयों के प्रधान ईसाई ही हैं।
- इन पर पूर्ण नियंत्रण मिशनरी संस्थाओं का है। शासन का नहीं।
- शिक्षण संस्थाओं में छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का आर्थिक शोषण अधिक हो रहा है उसी के आधार पर इन विद्यालयों के भवनों में भव्यता दिखाई देती है।

- विद्यालयों में शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी है। अधिकांश मिशनरी विद्यालयों में लिखित प्रवेश परीक्षा द्वारा प्रवेश होने के कारण अच्छे मानसिक स्तर के छात्रों के पहुंचने से अच्छे परिणाम दृष्टिगत होते हैं।
- विद्यालय छात्रों को आधुनिकता अथवा भौतिकवादी दौड़ में आने के लिए प्रयासरत हैं। इससे पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है और भारतीय संस्कृति हताहत एवं कुठाराघात हो रहा है।
- ये विद्यालय लोकतांत्रिक उद्देश्यों की पूर्ति करने में विफल रहे है।

गुप्ता सत्येंद्र (2005) "बुंदेलखंड क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान" का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि

- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश के प्रदेश स्तरी मेधावी छात्र सूची में अपना स्थान निरंतर बना रहा है।
- छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास हेतु संतोषजनक प्रयास है। विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन होता है। अभ्यास के पर्याप्त साधन उपलब्ध है।
- ये विद्यालय स्ववित्तपोषित है। इन विद्यालयों में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं, राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रभक्ति के विकास के लिए सार्थक प्रयास किए जा रहे है।

सिंह नीलम (1999) "भारत वर्ष में मिशनरी शिक्षा योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" पर अध्ययन किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि

- मिशनरी शिक्षा देश में न केवल आधुनिक शिक्षा पद्धति को प्रचलित किया वरन स्वयं शिक्षा संस्थाओं का संचालन करके भारतीयों के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।
- मिशनरियों ने एक नवीन प्रणाली का सूत्रपात करके इस देश की जनता का एक अकथनीय हित किया। उन्होंने भारतीय जनता को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया एवं उनके स्तर को ऊंचा उठाया।
- अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारतीय समाज का पुनरुत्थान हुआ। भारतीय समाज की जाति प्रथा, ऊंच- नीच, सती प्रथा और शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों का निराकरण किया तथा भारतीयों को पाश्चात्य विज्ञान के अध्ययन का अवसर मिला। जिस कारण श्री रामानुजम जगदीश चंद्र बसु तथा सीवी रमन जैसे वैज्ञानिकों का जन्म हुआ।

- अंग्रेजों ने भारतीय कला, चित्रकला, वस्तु कला, मूर्तिकला की खोज एवं उसके संरक्षण की व्यवस्था की। भारत में साहित्य तथा सांस्कृतिक जागृत उत्पन्न हुई।

- अंग्रेजी शिक्षा के कुछ दोष भी थे। भारतीय संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव। पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता को थोपा गया। राष्ट्रीय एकता समाप्त हो गई। शिक्षा शक्ति सुलभ के बजाय महंगी हो गई। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हुई। भारतीय साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करने की उपेक्षा की गई।

सिंह रेनू (2008) ने "भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरुप इन्होंने पाया कि

- छत्रपति शाहूजी महाराज के शैक्षिक विचारों से यह तक पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओ के प्रति भली-भांति जागरूक थे। इसलिए उन्होंने जीवन के कटु सत्य की उपेक्षा नहीं की। शिक्षा के द्वारा बुद्धि, मस्तिक, शरीर, आत्मा के साथ ही हाथों का प्रशिक्षण करने के पक्ष में थे।

- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुनर्निर्माण की तीव्र अभिलाषा छत्रपति शाहूजी के शैक्षिक विचारों की विशेषता है। ये व्यक्ति की असीम शक्ति पर विश्वास करते थे। उनका मानना था कि वास्तविक शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है।

- उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य अध्यात्मवाद एवं भौतिकवाद से संबंधित बताया। हरिजन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, जनसाधारण की शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया। इन्होंने व्यवसायिक विज्ञान शिक्षा पर अधिक जोर दिया जो वर्तमान में प्रासंगिक है।

- परीक्षा के प्रति इनका दृष्टिकोण आंतरिक परीक्षा प्रणाली है। शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में शाहू जी के विचारों में अनेक गुण विद्यमान हैं। स्वतंत्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति एकाग्रता, चिंतन, सामाजिकरण, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व विकास, शिक्षकों का सम्मान आदि।

सिंह राजेश (2008) "बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता पर अध्ययन किया" अध्ययन में उन्होंने पाया कि

- बौद्ध दर्शन का प्रभाव तत्कालीन समाज पर विशेष रूप से परिलक्षित होता है तथा शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त प्रभाव डाला था। बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य वस्तुतः व्यक्ति का अध्यात्मिक विकास करना था।

- आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लौकिक विषयों को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया। धर्म एवं दर्शन के विषयों पर विशेष बल दिया जाता था।

- जहां एक ओर प्रतिभाशाली छात्रों के लिए विशेष ध्यान दिया जाता था। वहीं मंद बुद्धि के बालकों के लिए अलग से शिक्षण की व्यवस्था थी। वैदिक शिक्षा की भांति बौद्ध शिक्षा में भी शास्त्रार्थ तथा अनुसंधान को महत्व दिया जाता था। स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा प्रदान करने में वर्ण व्यवस्था का कोई महत्व नहीं था। योग्य छात्र किसी भी वर्ग से सम्बद्ध थे उन्हें निष्पक्षता से शिक्षा प्रदान की जाती थी।

- वर्तमान शिक्षा में बौद्ध शिक्षा का समावेश कर हम वर्तमान समाज को पुनः एक बार सुसज्जित सुपोषित एवं सुरक्षित कर सकते हैं।

सिंगल आरती (2005-6) "आधुनिक भारतीय परिपेक्ष में श्रीमद् भागवत गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन" किया। निष्कर्ष स्वरुप उन्होंने पाया कि-

- शिक्षा का अध्ययन यदि इतिहास की आंखों से किया जाए तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दिशा मिल सकती है। शिक्षा के शिक्षक के वंशक्रम और शिक्षा की संस्कृति का अध्ययन विचार के नए द्वार खोलता है।

- प्राचीन काल में अध्यात्मिक से ही राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक धाराएं प्रवाहित हुई। सत्याचरण, प्रेम, अहिंसा आदि पर ही सामाजिक जीवन की नींव रखी गई। भारतीय शिक्षा का आरंभ प्रकृति की गोद में मानव की मूल जिज्ञासा की शांति था। जिसका संरक्षण गुरुकुल में होता था।

- श्रीमद्भागवत गीतादर्शन वस्तुतः शिक्षा दर्शन का आधार है। गीतादर्शन व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक दोनों विधाओं में भली-भांति आवश्यक बताती है। श्री गीता दर्शन में शिक्षा का आधार धर्म एवं धार्मिक क्रियाएं है। विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता की तरह सदमार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा देता है अनुकरण करने की प्रेरणा देता है और पत्नी के पत्नी के समान सुख देती है।

शर्मा डॉ० शशीकांत (2007) "गिजुभाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय शिक्षा परिषद में इसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप इन्होंने पाया कि-

- गिजुभाई अपना संपूर्ण जीवन बालकों के हितों की रक्षा के लिए अर्पित किया। बाल शिक्षा में उनका योगदान अतुलनीय है। गिजू भाई मॉन्टेसरी से अधिक प्रभावित थे।

- गिजुभाई का मत है कि शिक्षा व्यवस्था पर विचार करते समय क्या पढ़ना? किस लिए पढ़ना? और कैसे पढ़ना? इन पर चिंतन करना आवश्यक है। उनका मानना है कि मानव की स्वाभाविकता की रक्षा करने वाली तथा उसके स्वभाव को उच्चगामी बनाने वाली हो। शिक्षा जीवनव्यापी प्रक्रिया है इसका उद्भव मानव के भीतर से है।

- उन्होंने शिक्षा का उद्देश स्वास्थ्य शिक्षा, अध्यात्मिक विकास, चारित्रिक विकास, आत्माभिव्यक्ति, वैज्ञानिक बुद्धि का विकास, शांत एवं बंधुत्व का विकास, व्यावसायिक दक्षता का विकास होना बताया है।

- गीजूभाई लड़कियों और लड़कों के समान पाठ्यक्रम का समर्थन करते हैं। पाठ्यक्रम में गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाज विज्ञान, कला, व संगीत, जैसे परंपरागत विषयों के साथ-साथ व्यवसाई कौशलों का विकास करने वाले विषयों को शामिल करना भी आवश्यक मानते हैं। गिजूभाई बधेका छोटे बालकों के लिए मांटेसरी शिक्षा पद्धति का पुरजोर समर्थन करते है। उनका मानना है कि इस पद्धति का उद्देश्य बालक के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्व:स्पूर्ति विकास में सहायता देना है।

- गिजूभाई भय और दमन पर अधिक आधारित अनुशासन के घोर विरोधी थे। बालक के मानसिक व्यवहार के मूल कारण को जानकर उसका समाधान करना ही उनकी दृष्टि में व्यवहार परिष्करण का सर्वोत्तम तरीका है। उनका मत है कि शिक्षक का व्यवहार शिक्षण पद्धति तथा विषय वस्तु यदि बालक के रुचिकर होंगे तो स्वाभाविक रूप से अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न नहीं होगी।

तिवारी सुधा (2003-4) "लघु शोध हेतु लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गांधी एवं पंडित दीनदयाल जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन" किया। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि-

- गांधीजी का प्रादुर्भाव ऐसी परिस्थिति में हुआ था जब नैतिक मूल्य तथा मानव की प्रतिष्ठा का अवमूल्यन हो रहा था। नैतिकता संकटापन्न हो गई थी। ऐसी विषम परिस्थिति में महात्मा गांधी जी ने नए मूल्यों को व्यवस्थापित करने की आवश्यकता का अनुभव कर संपूर्ण मानवता को जागृत करने का संकल्प ले लिया था। इसलिए उन्होंने अकेले समाज में व्याप्त समस्त बुराइयों की सामूहिक शक्ति से संघर्ष करते रहे।

- उनका दर्शन आध्यात्मिक एकता के सिद्धांत से अभिभूत है। महात्मा गांधी जी के अनुसार मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य आत्मानुभूति है। इसका तात्पर्य है अंतिम सत्य का अनुभव करना, मोक्ष प्राप्त करना, ईश्वर का साक्षात्कार करना। महात्मा गांधी के दर्शन का मौलिक तत्व मानव जीवन के लक्ष्य की व्याख्या करना और उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मार्ग व विधि प्रतिपादित करना है।

- महात्मा गांधी जी की प्रबल इच्छा नवीन अहिंसक सामाजिक व्यवस्था का उद्विकास करना था। वह चाहते थे कि ऐसे समाज के विकास हेतु प्रत्येक प्राणी को ईश्वर अनुभूति के श्रेष्ठ लक्ष्य को सदा अपने सामने रखना होगा। इस प्रकार से विकसित नया समाज सर्वोदय समाज कहलाएगा। महात्मा गांधी अयोग्य स्पर्धा की प्रकृति से बचने के लिए ही कुछ सीमा तक वर्ण कानून में विश्वास करते हैं। गांधी जी यह मानते थे कि प्रत्येक वर्ण को अपनी जीविका कमाने के लिए कार्य श्रम करना चाहिए। शारीरिक श्रम दैनिक जीव का के लिए अनिवार्य है।

- गांधीजी के इन नवीन सामाजिक व्यवस्था में शोषण, जिम्मेदारी, प्रथा एवं पूंजीवाद का अभाव पाया जाता है। महात्मा गांधीजी के अनुसार शिक्षा का तात्पर्य शरीर, मन, आत्मा में निहित समस्त क्षमताओं का सर्वतोमुखी विकास करना है। वे प्रचलित शिक्षा का विरोध करते थे ऐसी शिक्षा व्यर्थ है जो विद्यार्थियों को उनके माता पिता तथा पैतृक व्यवसाय से अलग करती है। गांधी जी की शिक्षा का उद्देश्य समृद्ध जीवन के विभिन्न पहलुओं एवं ईश्वरानुभूति को रखा है यह शिक्षा का सर्वाधिक लक्ष्य है।

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार गांधी जी के विचारों से साम्य रखते हैं। दोनों सामाजिक समस्याओं के समाधान में ही शिक्षा का महत्व प्रतिपादित करते हैं। आत्म क्रियाशीलन, शारीरिक श्रम, स्वानुभूति तथा सामाजिक सेवा हेतु आत्मानुभूति पर बल देते है। सत्य के प्रति दोनों के विचार एक तरह से सामान हैं। महात्मा गांधी का सत्य सापेक्षिक है। इनका सापेक्षिक सत्य प्रयोगीय है, परीक्षणीय है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी उन महापुरुषों में से एक आधुनिक राष्ट्रीय चिंतक तथा अग्रगण्य महामानव है जिनके मार्गदर्शन में चलकर निश्चित ही यह राष्ट्र परम वैभव को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध हो सकेगा।

त्रिपाठी आशुतोष (2014) "शोध हेतु पंडित राम श्री राम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान का समीक्षात्मक अध्ययन" किया। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि-

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रणयति साहित्य और दर्शन का सम्यक अनुशीलन करने के उपरांत यह सहज ही परलक्षित होता है की आचार्य श्री का संपूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ शैक्षिक समाज के सृजन हेतु समर्पित है। उन्होंने कहा हम पश्चात अंधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूलाते जा रहा है जो कालांतर में हमें अपने गरिमा से गरिमा रहित कर देगी। आचार्य श्री का वैज्ञानिक अध्यात्मावाद शिक्षा व समाज निर्माण दोनों ही दृष्टियों से सर्वकालिक व सार्वदेसिक महत्त्व रखता है। समालोचनात्मक विश्लेषण के बाद प्राप्त तथ्यों के आधार पर अर्थोपरांत कतिपय महत्वपूर्ण निष्कर्ष आए हैं जो निम्नलिखित है।

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का अध्यात्मवाद वर्तमान परिवेश में पूर्णतया प्रसांगिक है। आचार्य श्री ने जहां एक ओर प्रचलित आडंबरों से उसे मुक्त कराया वहीं दूसरी ओर वह ऐसे अध्यात्म को आत्मसात करने की बात कहते है जो कोरे कर्म कांडो से दूर विशुद्ध वैज्ञानिकता पर आधारित है

- आचार्य ने अध्यात्मवाद में सत्य, एकता, सहयोग, आडंबरहीनता, दया, अहिंसा, आत्मशांति, धर्म परायणता, निर्भयता, अंतरदर्शन, उत्सर्ग, प्रयश्चित, अनेकता में एकता, सहअस्तित्व, ध्यान, परमानंद, सुचिता, विभेदीकरण, सहनशीलता जैसे अनेकानेक आधारभूत तत्व विद्यमान हैं जो छात्रों को आदर्श नागरिक बनाकर एक स्वस्थ शैक्षिक समाज के सृजन में सहायक है। आचार्य श्री के अध्यात्मवाद में सन्निहित आध्यात्मिक मूल्यों की समाज निर्माण में महती भूमिका है। आचार्य शिक्षा और समाज निर्माण को एक दूसरे का पूरक मानते हैं। स्वास्थ्य शैक्षिक समाज के निर्माण हेतु हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण गतिविधियों और शैक्षिक क्रियाकलापों को समाहित करना होगा जो आध्यात्मिक आधारभूत मूल्यों पर आधारित है तथा जिनकी समाज निर्माण में सार्वदेशिक व सार्वकालिक उपयोगिता है।

- Ncf-2005 में शांति शिक्षा को विशेष रूप से संदर्भित किया गया है। जो आचार्य श्री का अध्यात्मवाद एनसीएफ की इस अवधारणा को आधारभूमि प्रदान करता है।

- आचार्य का संपूर्ण व्यक्तित्व ही विश्व बंधुत्व का सबसे बड़ा संवाहक है। आपके अध्यात्मवाद में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, तदानुभूति सहनशीलता, को विशेष महत्व दिया गया है और यह आधारभूत तत्व ही विश्व बंधुत्व की भावना को उद्दीप्त करते है। वैज्ञानिक अध्यात्म भारतीय संस्कृति और परंपराओं के मूल में है और इस पर आधारित मूल्यों के सृजन और संवर्धन द्वारा ही हम वसुधैव कुटुंबकम की भावना को साकार कर सकते हैं। अस्तु पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का अध्यात्म छात्रों को आदर्श नागरिक के रूप में भी निर्मित कर उन्हें शांति का संवाहक और विश्व बंधुत्व का सर्जक बनाने में पूर्णता समर्थ है। आचार्य का अध्यात्मवाद विश्व धर्म, विश्व संस्कृति,विश्व राष्ट्र, विश्व भाषा की संकल्पना के साथ विश्व बंधुत्व की भावना को मूर्त रूप देने का एक सफल प्रयास है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित साहित्य के उपर्युक्त समीक्षात्मक अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि जैन दर्शन व बौद्ध दर्शन आदि के साथ प्राचीन से लेकर आज तक के अधिकांश विचारकों की साहित्यिक कृतियों पर शैक्षिक कार्य हुए जिसके आधार पर शैक्षिक विचारधारा, शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा के अन्य आयामों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। जिन्होंने माना की शिक्षा की सार्थकता मानव के समग्र विकास पर निहित है। दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में जैन मुनि तरुण सागर तथा ओशो के शैक्षिक विचारों को जानने का प्रयास किया गया।

वर्तमान प्रणाली में प्रासंगिकता के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन में महात्मा गांधी एवं महर्षि अरविंद के शैक्षिक विचारों में तुलना की गई। परंतु शोध अध्ययन में दोनों के विचारों में समानता देखी गई।

तृतीय अध्याय

आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन

जीवन में चरित्र, धर्म और ज्ञान की भावना को बल देने वाले इन महापुरुषों के क्रम में आचार्य विद्यासागर भी वर्तमान के शिखर पुरुष हैं।

जो समाज में व्याप्त कुरीतियों को अपने शैक्षिक वचनावृत से दूर कर रहे हैं।

संबंधित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत समस्या से संबंधित अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला यद्यपि उनके विपुल वांड्मय पर अनेक शोधकार्य हो चुके हैं। सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य मूकमाटी पर सर्वाधिक कार्य देखे गए। उनके साहित्य के उदात्त मूल्यों का अनुशीलन वर्तमान के गिरते जीवन मूल्यों को दिशा प्रदान कर रहा है। शिक्षा के अभिनव प्रयोग श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट व उनके शैक्षिक विचारों पर अभी तक कोई शोध कार्य देखने को नहीं मिला। ऐसे सचेतन शिक्षालय के शैक्षिक विचारों व कार्यो से अवगत कराना एवं विभिन्न क्षेत्रों में श्री श्री रविशंकर के सेवाओं को प्रकाश में लाना व राष्ट्रीय जीवन के विकास को आध्यात्मिक शिक्षा विकास से जोड़ने संबंधी योगदान को जनमानस के सामने लाना इस सोच का प्रयोजन है।

तृतीय अध्याय : श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट एक परिचय

3.1 संस्थापक परिचय

श्री श्री रवि शंकर (चित्र संख्या 3.1)

श्री श्री रविशंकर का जन्म 13 मई 1956 ई0 को तमिलनाडु के पापनासम में हुआ था ।पिता का नाम आर.यस.वेंकटरत्नम तथा माता का नाम विशालक्ष्मी रत्नम था।रविवार को इनका जन्म होने से इनका नाम रवि शंकर पड़ा। इनके प्रथम गुरु सुधाकर चतुर्वेदी थे।जो एक भारतीय वैदिक विद्वान थे।वह **आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन तथा श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट** के एक आध्यात्मिक नेता व संस्थापक हैं।उन्होंने 1997 में जिनेवा में **चैरिटी इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज** की स्थापना की। 2016 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। उन्होंने सेंट जोसेफ ऑफ बंगलुरु विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की। 1980 के दशक में रवि शंकर जी ने दुनिया भर में अध्यात्मिकता में व्यावहारिक और अनुभवी पाठ्यक्रमों की एक श्रंखला शुरू कि। उनका कहना है कि उनकी लयबद्ध श्वास योगाभ्यास एवं सुदर्शन क्रिया है। 1982 में कर्नाटक राज्य में शिमोगा में भद्रा नदी के तट पर 10 दिन की साधना के बाद उनके मन में एक प्रेरणा जगी तब उन्होंने पढ़ाना शुरू किया।

3.2 आर्ट आफ लिविंग फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित शैक्षिक साहित्य

शिक्षा, समाज, अध्यात्म, योग एवं आयुर्वेद से संबंधित श्री श्री रविशंकर जी की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें ---

पुस्तक	**लेखक**
"celebrating silence	Sri Sri Ravi Shankar"
"an intimate note to the sincer seeker "	Sri Sri Ravi Shankar
"yoga and vedic astrology"	Sri Sri Ravi Shankar
"divine diary from the art of living"	Sri Sri ravishankar
"breaking the myths about society"	D.k.Hari
"Brand Bharat unique the India"	D.K.Hari
"breaking the myth about ability"	D.K. Hari

"breaking the myths about identity"	D.K. Hari
"Unknowing the known "	Sri Sri Ravi Shankar
"management mantras from the art of living"	Sri Sri Ravi Shankar
"historical Rama from the art of living "	D.K. Hari
"enjoy vedic mathematics from the the art of living"	Dr.Raman kolluru
"Surya namaskar count from the art of living"	Sri Sri Ravi Shankar
"breaking the myth about prosperity "	D.K.Hari
"music divine from the art of living "	Sri Sri Ravi Shankar
"rapid fire question and answer with kids and teen"	Sri Sri Ravi Shankar
"Awakening"	Yaroh Etizion
"history of ancient Indian	Ramakrishan
"health and happiness"	Sri Sri Ravi Shankar
"Geeta Gyan"	Sri Sri Ravi Shankar
"Vedic tradition world religious"	RamaKrishan Srinivasan

"spirit of enquiry"	Shri Shri Ravi Shanka
"Adhyatmikta"	Sri Sri Ravi Shankar
"Netratva"	Sri Sri Ravi Shankar
"Niranjandhyan"	Sri Sri Ravi Shankar
Gharelu nukse "	Sri Sri Ravi Shankar
"Jeevan ka shrot"	Sri Sri Ravi Shankar
"अपने जीवन को सुंदर बनाने के 25 सूत्र"	श्री श्री रविशंकर

3.3 श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की स्थापना

[illegible]

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की स्थापना वर्ष 1999 में परम पावन श्री श्री रविशंकर ने आर्ट ऑफ लिविंग के शैक्षिक विंग के रूप में की थी। ताकि तनावमुक्त और बाल मैत्रीपूर्ण वातावरण में समग्र शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सके। 20 वर्षो के अंदर S SRVM ट्रस्ट ने प्री -प्राइमरी से लेकर पी.जी.तक के लगभग 100 शिक्षण संस्थानों की स्थापना की है।

3.4 श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट के उद्देश

- प्राकृतिक, अनुकूल वातावरण में एक सार्थक और आनंदपूर्ण शिक्षा की सुविधा प्रदान करना
- एकीकृत मूल्य शिक्षा के माध्यम से छात्रों के बीच सही रवैया बनाना
- अखंडता,ईमानदारी,जिम्मेदारी, संतोष,सभी धर्म के लिए सम्मान, शांति और अहिंसक संघर्ष के संकल्प के लिए एक अविश्वसनीय प्रतिबद्धता कुछ ऐसे मूल है जो हम अग्रभूमि की तलाश करते हैं जिससे हमारे छात्रों को सभी मनुष्यों को अनिवार्य रूप से देखने में सक्षम बनाया जा सके।
- छात्रों को उन पर विश्वास पैदा करने में सक्षम बनाना और निडर होकर जीवन में समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना।
- छात्रों को नृत्य संगीत और नाटक जैसी गतिविधियों को शामिल करके उनकी क्षमता को उजागर करने में मदद करना।
- प्रार्थना, योग, और ध्यान में संलग्न करके भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलू का विकास करना।
- सामाजिक जागरूकता और नेतृत्व की भावना पैदा करके उन्हें नेतृत्व ग्रहण करने और स्थानीय तथा विश्व समुदाय के उत्थान की दिशा में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- हस्तकाला या शिल्पकाला सार्वजनिक बोल, खेल, कार्यशालाएं और सेमीनार आदि नियमित पाठ्यक्रमों से उनकी दक्षता में निखार लाना ।

3.5 श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट के प्रभाव

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट विद्यार्थियों में रचनात्मक, दर्शनात्मक, सृजनात्मक, मानवीय मूल्यों, मनोवैज्ञानिक्ता, कौशलात्मक, सामाजिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण जागरूकता,प्राकृतिक सौंदर्यता,राष्ट्रीय एकता, खेल,संगीत, नृत्य आदि क्षेत्रों में उनके विकास एवं उनकी क्षमता, दक्षता को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।राष्ट्र साथ- साथ अंतरराष्ट्रीय में भी श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की स्थापना की जा रही है।यह संस्था भारतीय संस्कृत व मानवीय मूल्यों के संरक्षण के साथ-साथ आधुनिक शिक्षण,अधिगम प्रविधि, अवधारणाओं ,सिद्धांतों एवं आधुनिक सूचना संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग भी कर रहा है। ई.लर्निंग इस संस्था का अभिन्न अंग है। यह बच्चों को बदलती दुनिया में मुस्कान,प्रसन्नता के साथ रहने के लिए तैयार करने में मदद करता है और उन्हें सभी आवश्यक कौशल, सूचना एवं ज्ञान के साथ लैस करके वैश्विक नागरिक बनाने के योग बनाता है।

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की विभिन्न संस्थाओं में अध्ययनरत छात्रों के अनेक क्षेत्रों में सफलताएं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जो निम्नवत हैं--

- SSA कोलकाता को पश्चिम बंगाल स्टेट में 4th रैंक और विश्व शिक्षा रैंकिंग 2015 में राष्ट्रीय स्तर पर 81वी रैंक दी गई।

- SSA ने एम. पी. बिडला फाउंडेशन हायर सेकेंडरी स्कूल द्वारा आयोजित इंटर स्कूल फेस्ट VIBYGOR 2015 में क्लासिकल डांस में दूसरी और folk डांस में प्राइमरी और मिडिल क्लास के विद्यार्थियों ने पहला स्थान प्राप्त किया। SSA ने इवेंट में प्रतिष्ठित चैंपियन ऑफ चैंपियन ट्रॉफी जीती।

- SSRVM इंदौर SCKFI 1St अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में दिनांक 9 दिसंबर से 11 दिसंबर 2016 तक आयोजित की गई। कुमिते स्पर्धा के विभिन्न वर्गों के मुकाबले खेले गए जिसमें श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट के **हर्ष जैन** 10 वर्ष से कम आयु वर्ग में दूसरा स्थान एवं **पीयूष यादव** ने 14 वर्ष से कम आयु वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

- SSPM बोरीवली के छात्रों ने हैंडबॉल प्रतियोगिता में 14 लड़कियों की टीम को विजेता घोषित किया उन्होंने डिवीजन स्तर पर प्रथम रनर अप का स्थान प्राप्त किया।

- IEO अंतरराष्ट्रीय अंग्रेजी ओलंपियाड परीक्षा SSRVM बोरीवली की छात्रा सुश्री **अस्मी जोप** ने प्रथम स्थान पाने के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में 25 देशों के 1400 शहरों के 42800 से अधिक स्कूलों से भाग लेने वाले लाखों छात्र थे।

- SSRVM गोधवी को **खेलम कुंभ ताइक्वांडो टूर्नामेंट** में पदक मिला। **देवदास सारी** कक्षा 12 कॉमर्स ने 60 से 64 किलोग्राम में कांस्य पदक और **पार्थ शाह** ने कक्षा 12 विज्ञान 56 किलोग्राम में कांस्य पदक प्राप्त किया।

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर बेंगलुरु इनोवेशन में **ज्यूरी चॉइस अवार्ड जीता**।

- SSRVM मुलुंड की छात्रा **सौंदर्य** कक्षा 8 को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में 12 वी रैंक प्राप्त हुई। सौंदर्या हरिहरन को तीन अलग-अलग श्रेणियों में पुस्तकों के रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता दी गई।

- SSRVM लातूर के छात्रों ने महाराष्ट्र एसएससी 2020 उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किया

3.6 श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट के प्रयास

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट का प्रयास छात्रों को मुस्कान, प्रसन्नता पूर्वक की स्थिति में पढ़ा कर उनका सर्वांगीण विकास करना। यह संस्था छात्रों को विज्ञान तकनीकी,आयुर्वेद,नवाचार, मानवीय मूल्यों, संगीत, नृत्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में विकास हेतु प्रयास कर रही है। संस्था का प्रयास हिंसा मुक्त समाज, रोगमुक्त शरीर भ्रममुक्त मन, आरोध मुक्त, बुद्धि आघात मुक्त स्मृति का निर्माण करना है।

संस्था का उद्देश्य छात्रों को सृजनशील अहिंसा वादी बनाकर विश्व नागरिक के योग बनाना है। संस्था छात्रों को प्रशासन एवं प्रबंधन तकनीकी का ज्ञान प्रदान कर नेतृत्व क्षमता का विकास करती है।

3.7 श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट का कार्य क्षेत्र

श्री श्री रविशंकर ट्रस्ट की विभिन्न संस्थाएं देश एवं विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई हैं जो अग्र लिखित है।

विद्या मंदिर

- श्री श्री रवी शंकर विद्या मंदिर बेगूसराय ,बिहार
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, बयाद, गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, भिलोड़ा,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, गोधावी,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,गोधरा,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, हिम्मतनगर,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, सेते लिती,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,सूरत, गुजरात
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, बैंगलौर ईस्ट,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, बंगलौ र नॉर्थ, कर्नाटक
- श्री श्री श्री श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, बैंगलोर दक्षिण, कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, जीवन भीम नगर बेंगलुरु कर्नाटक
- श्री श्री श्री श्री श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, कारकाला,कर्नाटक

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, मंगलौर,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, मुदिपु ,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, शिमोगा, कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, चिक मंगलोर,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर , कोवूर,केरल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर कक्कोड़ी,कोझीकोड, केरल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, चेर्थला, केरल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, एर्नाकुलम, कोचीन, केरल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर काया कोल्लम केरल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,त्रिशूर,केरल
- श्री श्री रवी शंकर विद्या मंदिर, तिरुवंतपुरम, केरल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,भूगांव, पुणे, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ,बोरीवली,ईस्ट,महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, लातूर मराठी,महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर लातूर इंग्लिश, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,मोसी पुणे, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, मुलुंड मुंबई, महाराष्ट्र
- श्री रविशंकर विद्या मंदिर,इंदौर ,मध्य प्रदेश
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,धनेक नल, उड़ीसा
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर राउर केला,उड़ीसा
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, राजभवन रोड, हैदराबाद, तेलंगाना

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, अगरतला, त्रिपुरा
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर,नोएडा, उत्तर प्रदेश
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, आसनसोल, पश्चिम बंगाल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर विरतनगर,नेपाल
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, धारावी, मुलुंड

बाल मंदिर

- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर ,बोंगईगांव ,असम
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, अदाजन,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर ,करेलीबाग ,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, वदाली, गुजरात
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, विजयनगर ,गुजरात
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर , बनासवाडी,बैंगलोर
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, राजराजेश्वरी नगर, बैंगलोर
- श्री श्री रविशंकर बल मंदिर सिद्ध पुरा श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, तिलक वाडी, बेलगांव, बंगलोर
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, विजयनगर, बंगलोर
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, बनासवाड़ी,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, राजराजेश्वरी नगर, बैंगलोर
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर सिद्धपुर,बंगलोर,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर बल मंदिर तिलकवा डी,बेलगांव,बैंगलोर,कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर ,विजयनगर,बेंगलुरु

- श्री श्री रवि शंकर बाल मंदिर, कुर्ग, कर्नाटक
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, चेरनी लोर,केरल
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, कोइ लेंडी, केरल
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, मनकेव, केरल
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, नूरान द, केरला
- श्री श्री रविशंकर बल मंदिर, वे ,स्थली केरल
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, बावधन,पुणे
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, औरंगाबाद ,महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, महात्रे ब्रिज,महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, मयूर पार्क, औरंगाबाद, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, मोर्शी महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर संगमनेर महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर शिरामपुर, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बल मंदिर, शिरडी, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, वारजे, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बल मंदिर, यावत माल, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर बाल मंदिर, जयपुर, राजस्थान
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर विरतनगर,नेपाल
- आर्ट ऑफ लिविंग स्कूल मस्कट, ओमान

एकेडमी

- श्री श्री एकेडमी हड़पसर, पुणे, महाराष्ट्र

- श्री श्री एकेडमी, हैदराबाद, तेलंगाना
- श्री श्री एकेडमी, राजकोट,गुजरात
- श्री श्री एकेडमी, सिलिगुड़ी, पश्चिम बंगाल

कॉलेज

- श्री श्री कॉलेज आफ आयुर्वैदिक साइंस एंड रिसर्च बैंगलोर, कर्नाटक
- श्री श्री कॉलेज आफ आयुर्वैदिक साइंस एंड रिसर्च हॉस्पिटल बैंगलोर, कर्नाटक
- श्री श्री इंस्टिट्यूट ऑफ कंप्यूटर साइंस, ओमेरगा, महाराष्ट्र
- श्री श्री रविशंकर जूनियर कॉलेज, ओस्मनाबाद,महाराष्ट्
- श्री श्री कॉलेज आफ आयुर्वैदिक साइंस एंड रिसर्च हॉस्पिटल कटक, उड़ीसा

यूनिवर्सिटी

- श्री श्री यूनिवर्सिटी, कटक, उड़ीसा

अंतरराष्ट्रीय संस्था

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर विरतनगर,नेपाल
- आर्ट ऑफ लिविंग स्कूल मस्कट, ओमान

चतुर्थ अध्याय

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट एक परिचयात्मक विवरण

4.1 SSRVM का संस्थापक परिचाय
4.2 SSRVM की स्थापना
4.3 SSRVM के उद्देश्य
4.4 SSRVM का क्षेत्र
4.5 SSRVM का पाठ्यक्रम
4.6 SSRVM की कार्यप्रणाली
4.7 SSRVM का पर्यावरण
4.8 SSRM के संकाय
4.9 SSRVM की शक्ति
4.10 SSRVM के प्रभाव
4.11 SSRVM के प्रयास

चतुर्थ अध्याय- श्री श्री रविशंकर जी का शैक्षिक दर्शन

4.1 श्री श्री रविशंकर जी का शैक्षिक दर्शन श्री श्री रविशंकर जी के शिक्षा से संबंधित विचार निम्नलिखित 5 कारकों पर आधारित है।

1. संज्ञानात्मक
2. भावात्मक
3. भौतिक
4. सामाजिक
5. अध्यात्मिक

उनका शिक्षा से संबंधित एक उद्देश्य है जो अन्य शैक्षिक विचारको से एकदम अलग है **"विद्या ददाति पूर्णात्वम्"** जिसका अर्थ है शिक्षा में पूर्णता लाना। वह शिक्षा को चिंता मुक्त, तनाव मुक्त, स्वतंत्रता व प्रसन्न पूर्ण प्राप्त करने के पक्ष में हैं। उनका मानना है कि शिक्षा को योगक्रिया, सुदर्शन क्रिया जैसी दैनिक क्रिया विधि के माध्यम से प्राप्त करना चाहिए।क्योंकि बालक का संतुलित मानसिक, शारीरिक,सामाजिक व आर्थिक विकास इसी से संभव है। उन्होंने शिक्षा के 5 पहलू बताए है -

- कल्पना जो आग की चिंगारी की तरह हो।
- सूचना जो हवा की तरह हो ।
- अवधारणा ऐसी ठोस या कठोर हो जैसी पृथ्वी है।
- दृष्टिकोण ऐसे हो जैसा कि कंटेनर में भरा पानी का आकार।
- स्वतंत्रता अंतरिक्ष की तरह हो।

सुदर्शन क्रिया क्या है? सुदर्शन क्रिया सांस लेने की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शरीर, मन और हमारी सभी भावनाएं एक लय में आ जाती हैं। इस अनोखी प्रक्रिया के द्वारा शरीर व मन से तनाव, थकावट तथा किसी भी प्रकार के नकारात्मक विचार जैसे गुस्सा, चिड़चिड़ाहट, और निराशा स्वत: ही निकल जाते हैं। इस क्रिया को करने के पश्चात व्यक्ति उर्जा से परिपूर्ण, केंद्रित व तनाव मुक्त अनुभव करता है। यह क्रिया व्यक्ति को ऊर्जावान, सहज और प्रगतिशील बनाती है । सुदर्शन क्रिया जीवन को एक विशिष्ट गहराई प्रदान करती है।

सुदर्शन क्रिया विद्यार्थी के विकास में क्यों उपयोगी है? सुदर्शन क्रिया को करने से विद्यार्थी में तनाव, आलस्य दूर होता है जिससे विद्यार्थी को अध्ययन के प्रति लगन व रुचि बढ़ती है। विद्यार्थी में शुद्ध आक्सीजन व ऊर्जा का

संचार होने से मानसिक क्षमता एवं शारीरिक क्षमता बढ़ती है और उसका IQ स्तर भी बढ़ता है। दिमाग केंद्रित व सकारात्मक विचार होने से उनके मानवीय मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा वैज्ञानिक विकास में वृद्धि होती है। तनावमुक्त व निराशामुक्त जीवन विद्यार्थी को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सरलता प्रदान करता है। यह क्रिया स्वस्थ, प्रसन्नता, शांति और जीवन से परे ज्ञान का अज्ञात रहस्य है।

अध्यात्म- जीवन में सुखी कैसे? रहे जीवन में सफलता कैसे पाएं? श्री श्री रविशंकर जी द्वारा 1982 में दी गई आर्ट ऑफ लिविंग के रूप में एक अंतरराष्ट्रीय निर्मल, शैक्षिक व लोकोपकारी संस्था का प्रारंभ है। इनके शैक्षिक व आत्म विकास के कार्यक्रम में योग तथा सुदर्शन क्रिया जैसी प्रभावपूर्ण श्वास की तकनीकी द्वारा तनाव को मिटाने व उत्तम स्वास्थ्य का अनुभव कराना है। यह संस्था विश्व स्तर पर समाज के हर वर्ग के लिए प्रभावी व लाभकारी सिद्ध हुई है।

योग - योग अपने आप को जाने का विज्ञान है जो स्वयं आनंद, शांति व शुद्ध चेतन है। जब हमारे जीवन में दुविधा होती है तब तनाव में आ जाते और चिंतित हो जाते ऐसी परिस्थिति में हमारा पूरा शरीर थक जाता और मन में व्याकुलता बनी रहती है। योग एक ऐसा अनुशासन है जिसके द्वारा हम अपने प्रति और सजग हो जाते हैं।कुछ सरल योगासन, प्राणायाम और ध्यान द्वारा हम विश्राम कर सकते हैं और अपने मन व शरीर को पुनः ऊर्जा से परिपूर्ण कर सकते हैं। योग की तकनीकी द्वारा हम पुनःअपने जीवन में शांति व समृद्धि का स्वागत कर सकते हैं।

ध्यान- मन की ऊपरी सतह का ठहराव लाना ही ध्यान है। जब हम पूरी तरह से प्रसन्न होते हैं तो प्रेम से ओतप्रोत होते हैं तब ध्यान सहज ही हो जाता है।

4.2 श्री श्री रवि शंकर जी के शैक्षिक विचार

गुरुदेव श्री श्री ने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपने विचार रखे हैं कि "हम लोगों को दीर्घ दृष्टि देने की आवश्यकता है। जिनके पास दीर्घ दृष्टि है अथवा सपना है वह प्रगति कर सकते हैं और समाज का निर्माण कर सकते हैं।"

गुरुदेव श्री श्री ने भ्रष्टाचार की समस्या से निपटने के लिए इन 5 उपायों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

1.सहयोगिता- एक दूसरे के प्रति जुड़ाव और अपनेपन की भावना की कमी से समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। इसलिए भ्रष्टाचार से बचने के लिए जुड़ाव स्थापित करना आवश्यक है।

2.साहस - जब व्यक्ति अपनी क्षमता और आत्मविश्वास में स्थायित्व और सुरक्षा की भावना पाता है तब भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है।

3.ब्रह्मांड विज्ञान- जीवन को ब्रह्मांड की विशालता और समय की असीमता के संदर्भ में देखने पर किसी के भी जीवन में गहराई आएगी और उसके दृष्टिकोण और विचारधारा में विस्तार होगा।

4.देखभाल और करुणा- यह सद्गुण हमारे समाज में और अधिक समर्पण निष्ठा की भावना पैदा करते हैं। निष्ठा का अभाव भ्रष्टाचार के बीच होता है।

5.वचनबद्धता- समाज में योगदान देने के लिए एक व्यक्तिगत वचनबद्धता की भावना भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए आवश्यक है। श्री श्री रविशंकर जी के विचार प्रेरणा देने वाले और जीवन जीने की कला सिखाने वाले हैं। वहीं अगर कोई भी व्यक्ति श्री श्री रविशंकर जी के विचारों का गंभीरता से अनुसरण करें तो वह अपने जीवन में सफलता जरूर हासिल कर सकता है।

गुरुदेव श्री श्री जी का विचार है कि-" कार्य करना और आराम करना जीवन के दो मुख्य अंग हैं इनमें संतुलन स्थापित करने के लिए अपनी योग्यता का उपयोग करना चाहिए।"

गुरुदेव श्री श्री ज्ञान के स्वरूप को निम्न प्रकार से **परिभाषित किया है-**

" ज्ञान बोझ है यदि वह आपके भोलेपन को छीनता है।ज्ञान बोझ है यदि वह आपके जीवन में एकीकृत नहीं है। ज्ञान बोझ है यदि वह प्रसन्नता नहीं लाता। ज्ञान बोझ है यदि वह आपको यह विचार देता है कि आप बुद्धिमान है।ज्ञान बोझ है यदि वह आपको यह प्रतीत कराता है कि आप विशेष है।" गुरुदेव श्री श्री कर्म करने में विश्वास रखते हैं। उनका विचार है कि चिंता करने से आपके जीवन में कोई बदलाव नहीं होगा। लेकिन काम करने से जरूर आप अपने आप को मजबूत बना सकते हैं।

गुरुदेव श्री श्री ने एक बुद्धिमान और एक मूर्ख व्यक्ति के अंतर को अपने विचार के माध्यम से निम्न प्रकार से व्यक्त किया है। गुरुदेव श्री श्री का मानना है कि -

"जो बुद्धिमान होता है वह दूसरों की गलती से सीख लेता है। जो थोड़ा कम बुद्धिमान होता है वह खुद की गलतियों से सीख लेता है।जबकि मूर्ख व्यक्ति एक ही गलती को बार-बार दोहराने के बाद भी उससे सबक नहीं लेते।"

गुरुदेव श्री श्री ने शिक्षा, राष्ट्र, व समाज के निर्माण में अनेक महत्वपूर्ण अपने विचार जनमानस के सामने रखे हैं जो निम्नलिखित है --

- शिक्षा के क्षेत्र श्री श्री रविशंकर के मुखारविंद से कहे गए अनमोल वचन इस प्रकार - **"आध्यात्मिक ज्ञान सहज ज्ञान संबंधी क्षमता, अभिनव क्षमता, और संवाद में सुधार करता है।"** इसका तात्पर्य

यह है कि अध्यात्म ज्ञान वह है जो नई-नई तकनीकी, सरल ज्ञान, परिचर्चा एवं वाद विवाद में सुधार करता हैं।

- उनका विचार है कि सफलता तभी मिलेगी जब आप जीवन में विफल होते हैं। आगे उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक ज्ञान आपको केन्द्रित होने की शक्ति देती जो कार्य में जुनून पैदा करती और ध्यान में उदासीनता से बाहर लाता है।

- विद्यार्थियों के लिए उन्होंने सद्गुण का पाठ पढ़ाया और विचार व्यक्त किए कि सदाचार का तब तक पालन किए जाओ जब तक वह तुम्हारा स्वभाव ना बन जाए। मित्रता, दया और ध्यान का नियमित रूप से अभ्यास जारी रखो जब तक तुम यह ना समझ जाओ कि ये तुम्हारे स्वभाव ही है।

- उन्होंने विद्यार्थियों के लिए संवेदनशील एवं सबल दोनों बनाने की पक्ष में थे। क्योंकि उनका मानना है कि संवेदनशीलता अंतर्ज्ञान है, अनुकंपा है, प्रेम है। संवेदनशीलता आत्मबल है और आत्मबल स्थिरता, तितिक्षा, मौन, प्रतिक्रिया विहीनता आत्मविश्वास, निष्ठा और एक मुस्कान है।

- श्री श्री पाठ्यक्रम में गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाज विज्ञान, कला, व संगीत, जैसे परंपरागत विषयों के साथ-साथ व्यवसायी कौशलों का विकास करने वाले विषयों को शामिल करना भी आवश्यक मानते हैं।

बच्चों को योग्य बनाने के उपाय

1. आपको अपने बच्चों को बहुमुखी प्रवृत्तियों से परिचित कराना आवश्यक है। जैसे विज्ञान,कला और सबसे महत्व पूर्ण है सेवा। यह सुनिश्चित करें की बच्चों की दृष्टि विशाल हो साथ ही उनकी जड़ें भी गहरी हो। प्रत्येक बालक इसी धरती पर कोच निश्चित प्रकति और मूलभूत सोच के साथ आया है जोकि बदला नहीं जा सकता है।

2. माता पिता के रूप में उनको स्वप्न के लिए प्रेरित करना आवश्यक लेकिन झूठी 800 जगानी आशा जगानी ठीक नहीं है। यह सुनिश्चित कर लें कि आपके बालक की दाएं और बाएं मस्तिष्क की गतिविधियां ठीक हैं या नहीं। क्योंकि विद्या देवी सरस्वती की अवधारणा विश्व में अनूठी है उनके एक हाथ में वीणा संगीत का यंत्र और दूसरे हाथ में पुस्तक ज्ञान का चिन्ह। पुस्तक बाएं मस्तिष्क की प्रवृत्तियों को दर्शाता है और संगीत दाएं मस्तिष्क को। जपमाला भी है जो कि ध्यान मग्नता के पहलू पर प्रकाश डालती है। इस प्रकार गान, ज्ञान और ध्यान यह तीनों मिलकर सभी पहलुओं से शिक्षक को पूर्ण करते हैं।

3. जो बच्चें अहंभावी होते हैं वह छोटों को छोड़कर बड़ों के साथ ज्यादा रहते हैं। आपको कुछ इस प्रकार के खेल सृजित करने होंगे और उनके साथ इस प्रकार का व्यवहार करना होगा ताकि वे तीनों आयु वर्ग के लोगों के साथ थोड़ी बहुत बातचीत करने लगे। आप उनको व्यक्तित्व केंद्रित, गुणवान, सरल और सभी ग्रंथियों से हो मुक्त हो ऐसे ढाल सकते हैं।

4. बालको में थोड़ी बहुत धार्मिकता, नैतिक और अध्यात्मिक मूल्य उन पर गहरा प्रभाव उत्पन्न करते हैं। यह अज्ञात रूप से उनके व्यक्तित्व का विकास करते हैं। उनसे थोड़ा बहुत गाना, मंत्रोच्चारण, ध्यान और प्राणायाम करवाना चाहिए। शोध कार्यों से पता चला है कि ध्यान और प्राणायाम उनकी योग्यता को बढ़ाते हैं। वे शांत, सतर्क, सजग और समझने की योग्यता को बेहतर कर पाते हैं।

5. जब हम विश्वास का वातावरण बनाते हैं तो बच्चे बुद्धिमान बनकर बड़े होते हैं। लेकिन यदि हम नकारात्मक, परेशानी, उदासी और क्रोध का वातावरण बनाते हैं तो वह बड़े होकर यही सब वापस लौटाते हैं।

6. प्रकृति के अनुसार बालक में भरोसा रखने की की प्रवृत्ति होती है लेकिन जब वे बड़े होते हैं तो उनका विश्वास कहीं ना कहीं टूट य हिल जाता है। एक स्वस्थ बालक में तीन प्रकार का विश्वास होता है

   1. दिव्यता में

   2. लोगों में

   3. लोगों की अच्छाई में

   ये तीन प्रकार के विश्वास ही एक बालक को गुणवान और प्रतिभाशाली बनाने के लिए आवश्यक तत्व हैं

1. पहले शिक्षक, गुरु और उपदेशक उनके सलाहकार की महत्वपूर्ण उनका निभाते आजकल यह बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं है। अभिभावक को दोनों ही भूमिका निभानी होती है। एक प्रेरक और दूसरी सलाहकार की। यह एक घुड़सवारी की तरह है कभी लगाम कसनी होती है तो कभी ढीली छोड़नी होती है।

उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट है कि श्री श्री रविशंकर जी कर्म पर विश्वास रखते हैं। वह समाज को खुशहाल, प्रसन्न,स्वस्थ एवं अहिंसावादी देखना चाहते हैं। वह एक अध्यात्मिक समाज की कल्पना करते जिसमें व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है।

4.3 शिक्षा का उद्देश्य

श्री श्री रविशंकर जी ने शिक्षा के निम्नलिखित पांच उद्देश बताएं है-

1. **जानकारी-** प्रायः हम जानकारी को शिक्षा समझते हैं परन्तु यह शिक्षा का एक पहलू है
2. **धारणा-** सभी अनुसंधान की आधार है धारणाएं। एक धारणा के आधार पर ही कोई रचना होती है।
3. **प्रवृत्ति-** सही प्रवृत्ति बनाना शिक्षक का अभिन्न पहलू है। सही समय और स्थान पर सही प्रवृत्ति तुम्हारे कार्यों और व्यवहार को निश्चित करते हैं।

4. **कल्पना-** रचनात्मकता के लिए, कलाओं के लिए कल्पना आवश्यक है। परन्तु कल्पना में भी फंस जाने से तुम मानसिक रोगी बन सकते हो

5. **स्वतंत्रता** - स्वतंत्रता तुम्हारा स्वभाव है। केवल स्वतंत्रता से ही आनंद, उदारता तथा अन्य मानवीय मूल्य खिलते है। स्वतंत्रता के बिना कल्पना ठहर जाती है, घुटन होती है धारणाएं बोझ लगती हैं और जानकारी अनुपयोगी है। शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र की प्रगति और उन्नति होना चाहिए।

4.4 शिक्षा में प्रयास

4.4.1 प्रबंधन के क्षेत्र में

प्रबंधन का आरंभ मन से होता है । जब मन स्वयं को योग्य ढंग से संभालना सीख जाता है तो वह किसी भी वस्तु या स्थिति को संभाल सकता है। किसी भी संगठन में शीर्ष प्रबंधन को यह स्पष्ट करते हुए लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए की वह क्या प्राप्त करना चाहता है? मध्यम क्रम के प्रबंधन वर्ग को यह देखना चाहिए कि लक्ष्य कब और किस प्रकार पूरे करने की आवश्यकता है? कनिष्ठ प्रबंधन को पूर्व निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधनों का उपभोग करते हुए उस में रुचि लेने और उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिए। शीर्ष स्तर पर बैठे व्यक्तियों को विस्तारवादी होना चाहिए और निचले स्तर पर काम करने वाले व्यक्तियों को गुणवत्ता के प्रति जागरूक होना चाहिए। लेकिन इन सभी स्तर के व्यक्तियों को एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। यह एक स्वस्थ संस्थान का लक्षण है।

प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण भाग है **सृजनात्मकता** क्योंकि सृजनात्मकता उद्यम का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इस प्रकार इन्होंने प्रबंधन को तीन वर्गों में बांटकर उनकी योग्यता के अनुसार क्या-क्या उत्तरदायित्व हैं होने चाहिए तथा किस प्रकार की प्रबंधन की आवश्यकता है। किसी भी संगठन को चलाने के लिए इस पर विस्तार से अपने विचार रखे हैं। होना चाहिए तथा किस प्रकार की प्रबंधन की आवश्यकता है। किसी भी संगठन को चलाने के लिए इस पर विस्तार से विचार रखे हैं। इन्होंने प्रभावी प्रबंधन की 4 स्वर्णिम कुंजियां बताई जो इस प्रकार है

1. वार्षिक वेतन वृद्धि

2. अंतः प्रेरणा
3. आंतरिक रूपांतरण
4. एक ध्यानस्थ मन, शांत और स्वच्छ मानसिक स्थित

4.4.2 नेतृत्व के क्षेत्र में

श्री श्री रविशंकर का विचार है कि" एक वास्तविक नेतृत्वकर्ता पूर्ण स्वछंदता देता है, वह नेतृत्वकर्ता तैयार करता है न कि अनुयायी।"

एक अच्छे नेतृत्वकर्ता की मुख्य पहचान है कि वह लोगों को नियंत्रित नहीं करता है। श्री श्री के द्वारा एक अच्छे नेतृत्व में कुछ प्रमुख विशेषताएं बताई हैं। जो इस प्रकार है-

* उदाहरण प्रस्तुत करना

* चुनौतियां स्वीकार करना

* मस्तिष्क और हृदय में संतुलन बनाए रखना

* सहानुभूति रखना

* स्वयं की सुविधा की परवाह न करना

* दूरगामी दृष्टि

* सत्यवृती

* नीराभिमानी

श्री श्री के अनुसार एक नेतृत्व करता अपने आप को सदैव एक विद्यार्थी समझता है और वह प्रत्येक व्यक्ति से यहां तक कि एक बच्चे से भी सीखता है। श्री श्री ने नेतृत्व कौशल विकसित करने की कुछ पद्धतियां बताई हैं जो इस प्रकार हैं-

* विश्वास जागृत करना

* आत्मीयता की भावना का विकास

* उपस्थिति द्वारा स्वयं को व्यक्त करना

* कार्यस्थल पर स्वतंत्रता अनुभव करना

* उचित मानसिकता विकसित करना

* सपनों पर विश्वास करना

* वैज्ञानिक मनोदशा का पोषण

* प्रभावी संप्रेषण कौशल

* दल का निर्माण

* सभी भूमिका में स्वतंत्रता का अनुभव करना

* गतिशीलता में स्थिरता लाना

4.4.3 अध्यात्म के क्षेत्र में

इन्होंने अध्यात्म और अध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया है। इनके अनुसार अध्यात्मिकता प्रेम, शांति वचनबद्धता, सेवा भाव और विस्तृत मनोवृति है। श्री श्री का मानना है कि जागरूकता, अपनापन, और वचनबद्धता जीवन के मूलसूत्र है। इनके द्वारा आज हमारे बीच मानवीय मूल्यों को बढ़ाया जा सकता है। किसी भी क्षेत्र में प्रगति के लिए इन तीनों की अत्यंत आवश्यकता है।

जागरूकता

हमें विभिन्न स्तरों पर जागरूकता लाने की आवश्यकता है।

- पर्यावरण संबंधी जागरूकता
- मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता
- अपने व्यापार में नैतिकता की जागरूकता
- हमारे ग्रह के स्थाई विकास कैसे प्राप्त किया जाए इसके प्रति जागरूकता

अपनेपन की भावना

किसी भी निगम, संस्था या संगठन चलाने के लिए अपनेपन की भावना कि आवश्यकता है। जो लोगों को एक साथ जोड़ती है। किसी भी संस्थान की सफलता बहुत कुछ अपनेपन की मात्रा पर निर्भर करती है।

वचनबद्धता

प्रगति में योगदान देने वाला यह तीसरा घटक है। वास्तव में जब हमारे जीवन में जागरूकता और अपनेपन होगा तब वचनबद्ध स्वाभाविक तरीके से आ जाती है।

श्री श्री का मानना है कि "धर्म केले के छिलके के समान है और अध्यात्मवाद केला है। धर्म के तीन पहलू हैं -

- इसकी प्रथाएं
- इसके प्रतीक
- इसके मूल्य

मूल्य सभी धर्मों में समान हैं जबकि प्रथाएं और प्रतीक एक धर्म से दूसरे धर्म में अलग हैं। विभिन्नता हमारे प्रकृति में बसी है इसलिए हम अपने चारों तरफ की विभिन्नता को स्वीकार करते हैं। उनका मानना है कि यदि इस ग्रह पर प्रत्येक बच्चा विश्व के सभी अलग-अलग धर्मों के बारे में थोड़ा कुछ भी सीखता है तो आतंकवाद समाप्त हो जाएगा। और बच्चे वास्तव में सुदृढ और स्नेही व्यक्तियों के रूप में बड़े होंगे। कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म में आस्था रखना गलत है लेकिन हमें उन संख्या संकीर्ण सीमाओं को तोड़ाना होगा और एक सार्वभौमिक ज्ञान उत्पन्न करने की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता हमें यह सिखाती है **"मैं क्या हूं?" "क्या कर सकता हूं?"** आध्यात्मिकता आपके अंदर यह परिवर्तन लाती है **"मैं दूसरों का उपयोग कैसे कर सकता हूं?" "मैं दूसरों के लिए किस प्रकार उपयोगी हो सकता?"** तरफ जाने के लिए तैयार करती है।

आध्यात्मिकता वह तत्व है जो आपके जीवन को विचार देता है, जो आपको निखा रता है, जो आपको प्रसन्न रखता है जो आपको सहभागी होना और देखरेख करना सिखाता है। आध्यात्मिकता आपको सृजनशीलता, उत्साह और असीम ऊर्जा प्रदान करता है। यह सब आपकी समृद्धि के लिए आवश्यक है। आध्यात्मिकता आपको अंतः प्रज्ञा प्रदान करता हैं।

4.5 श्री श्री रविशंकर के अनुसार शिक्षा

श्री रविशंकर तनावमुक्त, मैत्रीपूर्ण वातावरण में समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के पक्ष में हैं। श्री श्री अध्यात्म को शिक्षा का एक प्रमुख अंग मानते हैं। उनका मानना है कि आध्यात्म प्रेम, करुणा और उत्साह जैसे मानवीय मूल्यों को बढ़ाता है। यह किसी एक धर्म, या संस्कृत तक सीमित नहीं है। उन्हें लगता है कि मानव परिवार के हिस्से के रूप में साझा आध्यात्मिक बंधन राष्ट्रीयता,लिंग, धर्म,पेशे या अन्य पहचानो से अधिक प्रमुख है जो हमें अलग करते हैं।

उनके अनुसार विज्ञान और आध्यात्म दोनों संगत है सवाल यह है **"मैं कौन हूं?"** यह आध्यात्मिकता की ओर जाता है,सवाल,**" यह क्या है?"** विज्ञान की ओर जाता है ।उनका कहना है आध्यात्म दुनिया को तनाव और हिंसा से मुक्त करता है। अध्यात्मिक अभ्यास दूसरों की सेवा करने के महत्व पर जोर देता है।

उनके विचार है **"सत्य रैखिक के बचाए गोलाकार है।"**

श्री श्री का मानना है कि योग और शिक्षा एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। उनका कहना है जब बच्चें अध्ययन करते करते थक जाते हैं, शरीर शिथिल होने लगता है तब योग क्रिया, आसन, प्राणायाम, सुदर्शन क्रिया आदि का अभ्यास करने से उनमें उर्जा का प्रवाह होने लगता है, मन शांत हो जाता है, ज्ञानेंद्रियां जागने लगती हैं ,चेहरे में मुस्कान आने लगती है, इसलिए प्रतिदिन सुबह योग क्रिया अवश्य करनी चाहिए।

श्री श्री का मानना है कि **"बुनियादी मानवीय मूल्यों को कक्षा में प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। एक बच्चा इन मूल्यों को साथ पैदा होता है और एक शिक्षक को उन्हें उजागर करने की आवश्यकता होती है। यह मानवीय मूल्य है- अनुकंपा, सहयोग, मित्रता, मुस्कुराहट, हंसी, हल्कापन, मदद करने की इच्छा, एक- दूसरे के लिए अपनेपन और देखभाल की भावना"**

गुरुदेव श्री श्री का मानना है कि सिर्फ जानकारी ही शिक्षा नहीं है यह चीजों को बेहतर तरीके से देखने, हमारे व्यवहार और दृष्टिकोण को संस्कृत बनाती है। सच्ची बुद्धि प्रदान कर सकती है। गुरुदेव श्री श्री चाहते हैं कि शिक्षा वैसी हो जो सद्भाव को बढ़ावा दें, संप्रदायिक विभाजन को खत्म करें, और बहुत संस्कृत शिक्षा का आह्वान करें ताकि एक बेहतर समाज का निर्माण हो सके।

4.6 योग एवं शिक्षा

योग का तात्पर्य भावनाओं, अपने स्वास्थ्य और अपने जीवन की परिस्थितियों के लिए और इसके पश्चात संपूर्ण विश्व की जिम्मेदारी लेना है। हमारी श्वास हमारे नकारात्मक संवेगो का शोधन करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। योग घृणा, क्रोध और प्रतिशोध से छुटकारा पाने में सफल बनाता है। योग का अभिप्राय आपको बच्चों जैसा बनना, उत्साह वा आनंद से परिपूर्ण करना, और प्रत्येक व्यक्ति के साथ जूड़ने की भावना से है। श्वसनक्रिया की कुछ पद्धतियों और लय को समझ कर क्रोध, घृणा, थकान, कुंठा, तथा प्रतिशोध जैसे नकारात्मक विचारों से छुटकारा पा सकते हैं। भारत सरकार के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) और भारतीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS) द्वारा किए गए अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि सुदर्शन क्रिया और प्राणायाम उदासीनता, मानसिक चिंता और तनाव को दूर करते हैं। इन तकनीकों से लाखों लोगों को लाभ हुआ है। विज्ञान ने भी इसे प्रणाली बद्ध अनुसंधान द्वारा अभिप्रमाणित किया है। अपनी श्वास के बारे में जानने से हमें अनेक प्रकार से सहायता मिलती है। अंततः इससे समाज को अपराध रहित और हिंसा रहित बनाने में सहायता मिलती है।

इन तकनीकों के अभ्यास के परिणाम स्वरूप हमें एक अपराध रहित समाज, एक स्वस्थ शरीर, और एक कंपन रहित श्वास की प्राप्त होती है। एक अवरोध रहित बुद्धि और आघात रहित स्मरण शक्ति यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जन्म सिद्ध अधिकार है। जब हम सुदर्शन क्रिया का अभ्यास करते हैं तो हमारी रोग रोधक कोशिकाएं कई गुना बढ़ जाती है।

एक स्वस्थ समाज में स्वस्थ व्यक्ति इन सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होगा-

- स्वस्थ शरीर
- कंपन रहित श्वास
- भ्रम रहित मन
- अवरोध रहित बुद्धि
- आघात रहित स्मरण शक्ति
- दुख रहित आत्मा

4.7 जीवन जीने की कलाएं

श्री श्री रविशंकर जी मुस्कानमय, प्रसन्नमय, भयरहित, चिंतारहित, दुखरहित जीवन जीने के लिए तकनीकी एवं युक्तियां सहित अपने विचार विश्व जनमानस के सामने रखें है। और करोड़ों लोग इससे लाभान्वित भी हुए है। श्री श्री रविशंकर विश्व के विभिन्न देशों में आर्ट ऑफ लिविंग की संस्थाएं चला रहे है। करोड़ों लोग इनसे प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। जीवन जीने के लिए रवि शंकर जी के विचार के कुछ अंश इस प्रकार -

1. यह सत्य है मृत्यु के समय ही मस्तिष्क शरीर से अलग होता है इसलिए उस समय जो भी छवि इंसान मन में रखता है वह अगले जन्म का कारण बनता है। यह वैज्ञानिक सत्य है।

2.श्री श्री रविशंकर जी मानना हैं कि लालसा को समावेश करने की आवश्यकता है। आपको गहरे ध्यान में जाना चाहिए या आप उसको कोई रचनात्मक रूप दे, कोई कविता या लेख लिखे। लिखना सहायक होगा। आप जानते हैं बहुत से उत्तम काम लालसा से उपजे है। चाहे वो चित्रकारी हो, संगीत, अभिनय, साहित्यिक रचना हो, ये सब गहरी लालसा से उभरे है इसलिए अपनी लगा को एक रचनात्मक दिशा दीजिए।

3.इंसानी जीवन में इच्छा को कभी भी खुद पर हावी न होने। इच्छा हमेशा अकेले मय शब्द पर लटकती रहती है ऐसे में जब इंसान मय का त्याग कर देता है तब इच्छा भी समाप्त हो जाती है।

4. श्री श्री का विचार है कि सर्वप्रथम तामसिक गुण से निष्क्रियता आती है इसलिए इसमें कोई शक्ति उत्पन्न नहीं होती है। राजसिक गुण से ऊर्जा आती है, शक्ति आती है, इसमें कोई संदेह नहीं है लेकिन यह सृजन की तुलना

किसी प्रणाली को नष्ट करने के लिए अधिक उपयुक्त है। यदि आप कुछ बहुत ही सृजनात्मक और रचनात्मक करना चाहते तब आपको सात्विक गुण की आवश्कता है।

5.संसार में सफल होने के लिए के लिए हमें अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखी होगी और अपने तनाव एवं कलह को छोड़ना होगा।

6.व्यक्ति को एक सफल इंसान बनने के लिए संयम रखना बहुत ही जरूरी है। एक सफल व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान उसका आत्मविश्वास होता है। एक सफल व्यक्ति के अंदर संयम, आत्मविश्वास,संतुलन,,एकाग्रता सहनशक्ति, सकारात्मक सोच होती है। जो व्यक्ति अपना जीवन बहुत अच्छी तरह से व्यतीत करता है वह समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण अपना महत्वपूर्ण योगदान भी देता है।इसलिए मैं आप लोगों को कहना चाहता हूं कि जीवन जीने की कला सीखने के बाद हम हर क्षेत्र में एक सफल इंसान बन सकते है।

7. जीवन जीने की कला से ही सफलता की यात्रा की जा सकती है। जो असफल व्यक्ति होता है वह असफलता प्राप्त इसलिए करता है क्योंकि वह संयम और आत्म विश्वास से काम नहीं करता है।

8.वासनाओं,अवधारणाओं,जैसी विभिन्न बुरी आदतों से छुटकारा पाने के लिए सबसे अच्छा उपाय है संकल्प य संयम। जब जीवन शक्ति में दिशा होती है। तब संयम द्वारा आदतों के ऊपर उठ सकते हो। लेकिन संकल्प करने के लिए समय एवं स्थान को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है।

9.श्री श्री का मानना है कि इंद्रिया अग्नि की तरह है। तुम्हारा जीवन भी अग्नि के समान है। इंद्रियों की अग्नि में जो कुछ भी डालते हो जल जाता है। जो अग्नि शीतकाल में जीवन को सहारा देती है वही अग्नि विनाश भी करती है। क्या तुम वह अग्नि हो जो वातावरण को धुएं और गंदगी से प्रदूषित करती है या कपूर की वह लौ हो जो प्रकाश और खुशबू फैलाती है। उच्चतम श्रेणी की अग्नि प्रकाश और उष्णता फैलाती है। मध्यम श्रेणी की अग्नि थोड़ा प्रकाश तो फैलाती है। साथ ही थोड़ा धुआं भी। निम्न श्रेणी की अग्नि सिर्फ धुआं और अंधकार फैलाती हैं। विभिन्न प्रकृति की अग्नि को पहचानना सीखो। यदि तुम्हारी इंद्रियां भलाई में लगी है तो तुम प्रकाश और सुगंध फैलाओगे यदि बुराई में लगे हैं तो तुम धुआं और अंधकार फैलाओगे। संयम तुम्हारे अंदर की अग्नि की प्रकृति को बदलता है।

4.8 श्री श्री रविशंकर जी के सामाजिक कार्य

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर जी संसार भर में श्रद्धेय एक आध्यात्मिक और मानववादी गुरु हैं। उन्होंने तनावमुक्त एवं हिंसामुक्त समाज की स्थापना के लिए एक अभूतपूर्व विश्वव्यापी आंदोलन चलाया है। विभिन्न कार्यकर्मों और पाठ्यक्रमों, **आर्ट ऑफ लिविंग एवं इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज** सहित संगठनों के एक नेटवर्क तथा 155 देशों से भी अधिक देशों में तेजी से बढ़ रही अपनी उपस्थिति से गुरुदेव अब तक अनुमानतः

370 मिलियन लोगों तक पहुँच चुके हैं। गुरुदेव ने ऐसे प्रभावशाली कार्यक्रमों का विकास किया है, जिन्होंने व्यक्ति को वैश्विक, राष्ट्रीय, सामुदायिक और व्यक्तिगत स्तरों पर चुनौतियों से निपटने के लिए सशक्त , सुसज्जित और परिवर्तित किया है। 1951 में दक्षिणी भारत में जन्मे गुरुदेव अत्यंत प्रतिभासम्पन्न संतान थे। चार साल की उम्र में ही वे भगवद गीता का पाठ करने में सक्षम थे, और अक्सर ध्यान में लीन पाए जाते थे। उनके पास वैदिक साहित्य और भौतिकी दोनों ही डिग्रियां हैं। 1982 में, गुरुदेव, भारत के कर्नाटक राज्य स्थित, शिमोगा में दस दिनों के मौन में गए और वहीं पर एक शक्तिशाली श्वास तकनीक सुदर्शन क्रिया का जन्म हुआ। समय के साथ, सुदर्शन क्रिया आर्ट ऑफ लिविंग के पाठ्यक्रमों का केंद्र बिंदु बन गयी।

गुरुदेव ने आर्ट ऑफ़ लिविंग को एक अंतरराष्ट्रीय, गैर-लाभकारी, शैक्षिक और मानववादी संगठन के रूप में सथापित किया। आर्ट ऑफ लिविंग के शैक्षणिक एवं आत्म-विकास के कार्यक्रम तनाव को समाप्त कर कल्याण की भावना को बढ़ावा देने वाले शक्तिशाली साधन प्रदान करते हैं। केवल किसी विशिष्ट समूह के लिये ही नहीं, बल्कि ये कार्यक्रम विश्व भर में समाज के सभी सतर के लोगों के लिए प्रभावकारी सिद्ध हुए हैं। 1997 में, उन्होंने सतत विकास परियोजनाओं के समायोजन, मानवीय मूल्यों के पोषण और संघर्ष के समाधान के लिए आर्ट ऑफ़ लिविंग के साथ ही इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज़ (IAHV) की भी स्थापना की। भारत, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में, दो सह-संगठनों के स्वयंसेवक ग्रामीण समुदायों में सतत विकास का नेतृत्व कर रहे हैं, और अब तक 40212 से भी अधिक गांवों तक पहुँच चुके है।

गुरुदेव ने संसारभर में शांति वार्ताओं के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गुरुदेव के कार्यक्रमों ने भारत में कश्मीर, असम और बिहार से लेकर कोलंबिया, कोसोवो, इराक, सीरिया और कोत दी'वायर तक, सशस्त्र संघर्ष में शामिल लोगों को शांति के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रभावित किया है। बढ़ती हिंसा और संघर्ष से भरे इस संसार में गुरुदेव ने एक ऐसा मार्ग प्रशसत किया है, जहां व्यक्ति आंतरिक रूप से शांति पा कर समाज के लिए शांति और सद्भाव का स्रोत बन जाता है। उदाहरण के लिए, 2003 के बाद से हजारों इराकी आर्ट ऑफ लिविंग के आघात राहत कार्यक्रमों से लाभान्वित हुए हैं। राष्ट्रीय-सामुदायिक स्तर पर, गुरुदेव के कार्यक्रमों ने प्रमुख सामाजिक समस्याओं को दूर करने की कोशिश की है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में युवा सशक्तीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत आंतरिक शहरों और स्कूलों में सामूहिक हिंसा, नशा और शराब की लत की समस्याओं से निपटा जा रहा है। प्रख्यात परियोजना **वेलकम होम ट्रूप्स** ने अमेरिकी युद्ध के पुराने सैनिकों के लिए जीवन-बदलने वाली आघात राहत सहायता प्रदान की है, जो कि एक डॉक्यूमेंट्री में दर्ज है।

गुरुदेव ने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता को पुनर्जीवित करने के लिए **इंडिया अगेंस्ट करप्शन और वर्ल्ड फोरम फॉर एथिक्स इन बिजनेस** जैसे आंदोलनों को चलाया तथा समर्थन दिया है। भारत के अंदरूनी क्षेत्रों में, गुरुदेव ने सुविधावंचित बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाले 618 स्कूलों की शुरुआत की है। जिससे 67000

से भी अधिक बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं और वर्तमान में उन्हें उपयोगी नागरिक बनने के लिए सुशिक्षित किया जा रहा। गुरुदेव के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित गतिविधियों का कार्यक्षेत्र संगठन के लिये प्रमुख रहा है। भारत में 33 नदियों और हजारों जल निकायों को वर्तमान में पुनर्जीवित किया जा रहा है; आर्ट ऑफ़ लिविंग के स्वयंसेवकों ने 36 देशों में 71 मिलियन पेड़ लगाए हैं। आर्ट ऑफ लिविंग जेल प्रोग्राम कैदियों के पुनर्वास में मदद कर रहा है और विश्व स्तर पर **7,00,000** से अधिक कैदियों तक पहुँच गया है। उदाहरण के लिए, उरुग्वे में, आंतरिक मंत्रालय ने उन कैदियों के लिए जेल की सजा को कम कर दिया है, जिन्होंने आर्ट ऑफ लिविंग जेल प्रोग्राम में भाग ले लिया है। गुरुदेव के स्वयंसेवकों का विशाल वैश्विक नेटवर्क दुनिया भर में जैसे मेक्सिको, हैती, अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, नेपाल, भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, जापान आदि के आघात और आपदा प्रभावित आबादी के लिए राहत जुटाने के लिए जाना जाता है।

व्यक्तिगत स्तर पर, गुरुदेव के आत्म - विकास कार्यक्रमों ने दुनिया भर के लाखों लोगों को तनाव से राहत देकर उन्हें शांत और स्वस्थ रहने में मदद की है। ये कार्यक्रम आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल योग की प्राचीन तकनीकों से युक्त हैं। इसके साथ ही इनमें गुरुदेव द्वारा दी एक अनुपम भेंट – सुदर्शन क्रिया है, जो श्वास लेने की शक्तिशाली तकनीक है तथा शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए सुविधा प्रदान करती है। इस क्रिया द्वारा पड़ने वाले प्रभाव पर प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने प्रलेख तैयार किया है कि, यह क्रिया किस प्रकार अवसाद का निवारण, कोर्टिसोल (तनाव के हार्मोन) में कमी और प्रतिरक्षा प्रणाली को सशक्त करती है।

धार्मिक,सामाजिक,राष्ट्रीय और सांस्कृतिक बंटवारे से टूटे हुए विश्व में, गुरुदेव का संदेश है कि यह संसार एक परिवार है। विविध धर्म, संस्कृति व परम्परायें प्रेम, करुणा, शांति अहिंसा आदि मानवीय मूल्यों में ही निहित हैं। इस विशाल दृष्टिकोण को प्रकट करते हुए, गुरुदेव ने ऐतिहासिक विश्व संस्कृति महोत्सव 2016 का आयोजन किया। इस महोत्सव ने 155 देशों के 3.75 मिलियन लोगों ने एक शानदार प्रदर्शन के साथ 7 एकड़ के मंच पर दुनिया भर से आये 36,602 नर्तकियों और संगीतकारों द्वारा सभी विश्वासों और संस्कृतियों की विविधता का उत्सव मनाया।

गुरुदेव को दुनिया भर में कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें कोलंबिया, मंगोलिया और पैराग्वे के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार शामिल हैं। भारत के माननीय राष्ट्रपति जी ने भी उन्हें असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए देश के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया। उन्हें विश्व स्तर पर 16 मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया है। एक सरल लेकिन शक्तिशाली संदेश के साथ गुरुदेव वर्ष में लगभग 40 देशों की यात्रा करते हैं, कि प्रेम और ज्ञान ही घृणा और संकट पर विजयी हो सकते हैं।

भारत में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन और अन्तरधर्म सद्भाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 67000+ बच्चों को भारत के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के 618 स्कूलों में निशुल्क शिक्षा प्रदान की। 37 नदियों और

हजारों जल निकायों को पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिससे भूजल स्तर ऊंचा हो रहा है, जिससे लाखों ग्रामीणों को लाभ मिल रहा है। 40,500 सफाई अभियान, 52,466 स्वच्छता शिविर, 27,427 चिकित्सा शिविर, 165,000 तनाव राहत शिविर आयोजित किये जिससे 5.6 मिलियन लोगों लाभान्वित हुए। 16,550 शौचालयों का निर्माण, 3,819 घर, 1,200 बोर-कुएँ और 1000 बायो-गैस प्लांट बनवाये। 27000 युवाओं को व्यावसायिक और उद्यमिता कौशल में प्रशिक्षित किया गया। भारत और नेपाल के दूरदराज के हिस्सों में अक्षय ऊर्जा के माध्यम से 760 गाँवों का विद्युतीकरण हुआ। नेतृत्व कार्यक्रम में 2,03,220 से अधिक ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है, जो 40,212 गांवों में विभिन्न विकास परियोजनाओं के साथ पहुंचे।
भारत के अतिवाद प्रभावित क्षेत्रों से 4500 सशस्त्र विद्रोही, हिंसा को त्यागकर समाज की मुख्यधारा में फिर से शामिल हुए।

22 राज्यों के 2.2 मिलियन से अधिक किसानों और युवाओं को प्राकृतिक कृषि प्रथाओं में प्रशिक्षित किया गया है। इराक में, 50000 लोगों को जीवन कौशल और आघात राहत कार्यक्रम प्रदान किए गए हैं। 4307 इराकी महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। 200 से अधिक शांति दूतों को आघात से प्रभावित लोगों को राहत देने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। इराक, इजरायल-फिलिस्तीन, सीरिया, जॉर्डन, लेबनान, किर्गिस्तान, श्रीलंका, बाल्कन और अफगानिस्तान में बाल सैनिकों सहित 1,50,000 से अधिक युद्ध से बचे लोग आघात राहत कार्यक्रमों से लाभान्वित हुए हैं । संयुक्त राज्य अमेरिका में | 2008 से 22 राज्यों के 147 स्कूलों में 73432 छात्रों और 2317 शिक्षकों ने विद्यालयों के लिए आयोजित YES कार्यक्रम में भाग लिया है। 1586 पुराने सैनिकों और परिवार के सदस्यों ने प्रोजेक्ट **वेलकम होम ट्रूप्स** कार्यक्रम के माध्यम से आयोजित SKY ध्यान कार्यशालाओं के द्वारा लाभ उठाया। **वेलकम होम ट्रूप्स** कार्यक्रम बुजुर्गों और सैन्य सदस्यों को के लिए एक पुनर्स्थापना का कार्यक्रम है, जो उन्हें पुराने और युद्ध के बाद के तनाव को कम करने के लिए साधन प्रदान करता है।

1992 से 10000 से अधिक कैदियों, सुधारात्मक अधिकारियों और कानून प्रवर्तन कर्मचारियों ने **PRISONSMART** कार्यक्रम के लाभों का अनुभव किया है, जो प्रभावी रूप से अपराधियों की मानसिकता, दृष्टिकोण और व्यवहार को बदल देता है।

पंचम अध्याय- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर एक अवलोकन

5.1 विद्यालय की स्थापना

पंचम अध्याय

श्री श्री रविशंकर के शैक्षिक विचार

5.1 स्वतंत्रता और अनुशासन
5.2 सहयोगिता
5.3 साहस
5.4 ब्रह्मांड विज्ञान
5.5 देखभाल और करुणा
5.6 शिक्षा के पहलू
5.7 शिक्षा में प्रयास

विद्यालय (चित्र संख्या-5.1)

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर, नोएडा की स्थापना सन- 2014 ई० में हुई थी।

5.2 विद्यालय का प्रकार

प्री -प्राइमरी से लेकर प्राइमरी स्तर तक

5.3 विद्यालय की भौगोलिक स्थिति
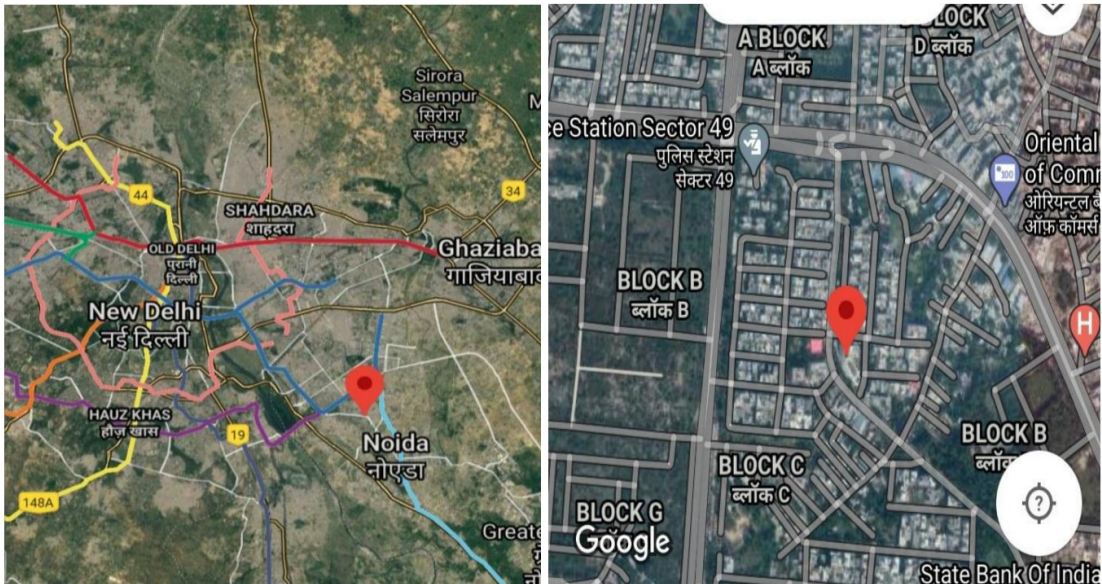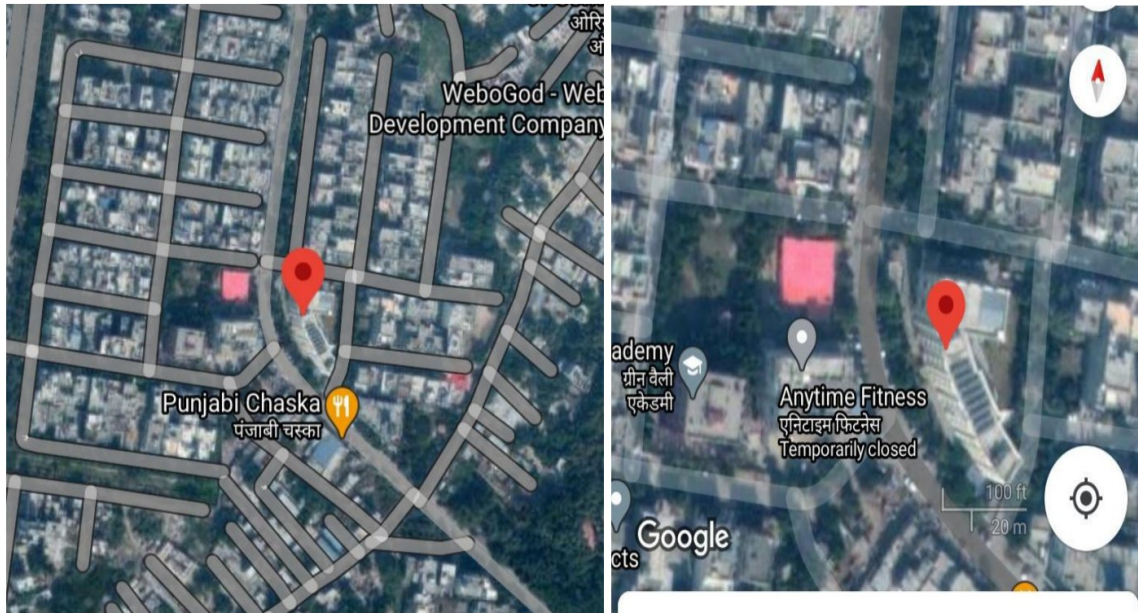
5.4 विद्यालय की स्थिति

B-182/A, near Samvedna Hospital, Sector 48, Noida, Uttar Pradesh 201303

5.5 विद्यालय स्थित का मैप
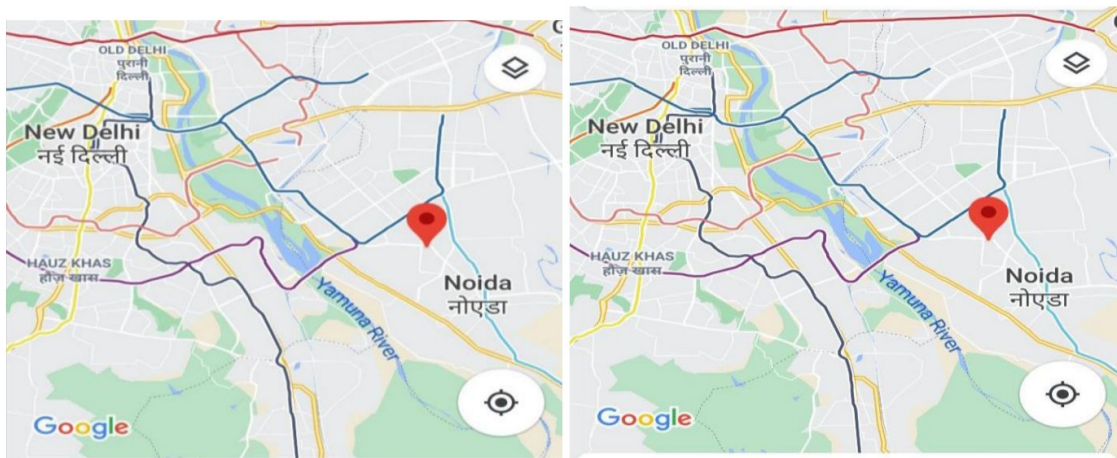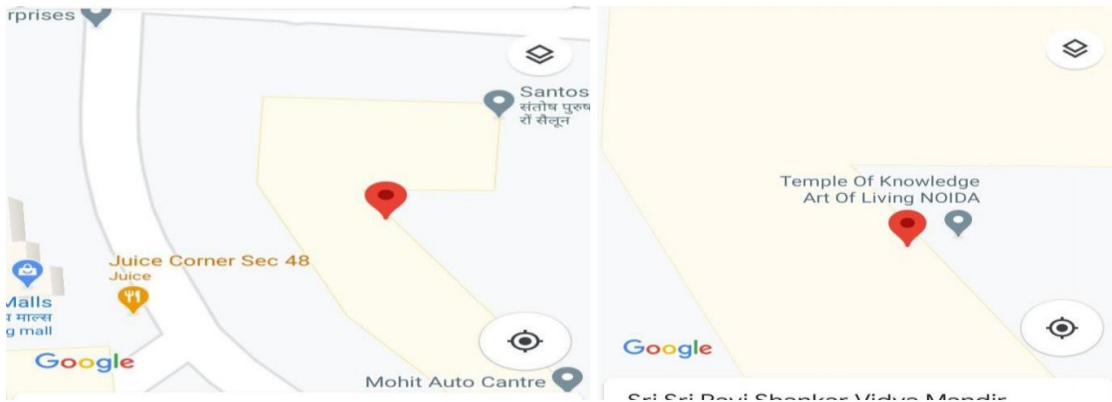
5.6 विद्यालय का वातावरण

सुंदर, स्वच्छ, शांत एवं पर्यावरण अनुकूल है। बैठने की उत्तम व्यवस्था है। आधुनिक भौतिक संसाधनों से सुसज्जित है।

5.7 विद्यालय की मान्यता

सेंट्रल बोर्ड ऑफ़ सेकेंडरी एजुकेशन(सीबीएसई), न्यू दिल्ली।

5.8 विद्यालय प्रार्थना

विद्यालय प्रार्थना स्थल (चित्र संख्या 5.8)

विद्यालय में प्रार्थना तीन प्रकार की होती है।

1.गुरु मंत्र- गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु: गुरु देवो महेश्वरा: गुरु साक्षात परम ब् ब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः

2.गायत्री मंत्र-ऊं भूर्भुवः स्व: तत सवितुर्वरेन्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योना: प्रचोदयात्।।

3. सरस्वती वंदना- सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी।

विद्यारम्भम् करिष्यामि सिद्धिर्भवतु में सदा।।

5.9 विद्यालय के प्राचार्य

श्रीमती पूनम मिश्रा

5.10 विद्यालय के शिक्षक

विद्यालय में 17 शिक्षिकाएं हैं जिसमें 2 शिक्षिकाएं रिसेप्शन में रहती है तथा 8 दीदियां है।

शिक्षिकाएं

1. रूबी नंदिनी
2. नंदा गुप्ता
3. आयुषी
4. प्रीति
5. पूनम चंद्रा
6. पूनम त्रिपाठी
7. कीर्ति
8. शारदा
9. रेखा वर्मा

10. आरती शर्मा

11. शिल्पी

12. बाबिता

13. ऋतु जैन

14. सैंपी

15. निधि खुराना

16. प्रियंका

17. दिव्यांशी

दीदियां

1. रेनू

2. सरोज

3.अनीता

5.श्री देवी

6. स्नेह लता

7. नेहा शर्मा

8. सुधा पूसा उषा

5.11 विद्यालय का माध्यम

विद्यालय का माध्यम अंग्रेजी है।

5.12 विद्यालय में प्रवेश

लिखित परीक्षा के साथ-साथ साक्षात्कार एवं अनंतिम चयन सूची में नाम आने पर प्रवेश दिया जाता है।

5.13 विद्यालय के विद्यार्थी

विद्यालय में वर्तमान में 150 विद्यार्थी अध्ययनरत है।

5.14 विद्यालय भवन

विद्यालय भवन (चित्र संख्या 5.14)

विद्यालय 5 मंजिला है जिसमें एक सिक्योरिटी रूम, एक हाल, वाहन पार्किंग, एवं गार्डन की उत्तम व्यवस्था है।

5.15 विद्यालय कक्षा कक्ष

विद्यालय में 13 कक्षा कक्षा एक कंप्यूटर कक्ष, 2 म्यूजिक कक्षा कक्ष । एक स्मार्ट कक्षा कक्ष। सभी कक्षा कक्ष वातानुकूलित है।

5.16 विद्यालय में स्मार्ट कक्षा कक्ष

स्मार्ट कक्षा कक्ष (चित्र संख्या 5.16)

विद्यालय में एक स्मार्ट कक्षा-कक्षा है।

5.17 प्रयोगशालाएं

विद्यालय में दो प्रयोगशालाएं है।

5.18 शौचालय

विद्यालय में 12 शौचालय है। जिसमें बालक - बालिकाओं के लिए अलग तथा शिक्षक ,कर्मचारियों के लिए अलग है।

5.19 कंप्यूटर कक्ष

कम्प्यूटर कक्ष (चित्र संख्या 5.19)

विद्यालय में एक कंप्यूटर कक्ष है।

5.20 समय सारणी

विद्यालय गर्मियों में 8:05 am से 12 pm तक तथा शीत ऋतु में 8:15 am 1:30 pm तक खुलता है।

5.21 पाठ्यक्रम

विद्यालय में सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है।

5.22 पाठ्य सहगामी क्रियाएं

विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में इंग्लिश लॉन्ग लैब, स्केटिंग, अबेकस, कैलीग्राफी, रोबोटिक्स, संगीत, खेल- कूद, इत्यादि है।

5.23 शारीरिक विकास

बच्चों को प्रसन्नमय और मुस्कान मय शिक्षा प्रदान करने के लिए उनका शारीरिक विकास व मानसिक विकास करना अति आवश्यक है इसलिए शारीरिक विकास से संबंधित यहां खेल- कूद , योग, व्यायाम , पीटी, , आगमनात्मक शैक्षिक एवं खेल सामग्री, व अन्य सहगामी क्रियाएं करवायी जाती है

5.24 छात्रवृत्तियां

विद्यालय की तरफ से छात्रों को कोई भी छात्रवृत्ति नहीं दी जाती।

5.25 छात्रावास

विद्यालय में छात्रावास की कोई सुविधा उपलब्ध नही है।

5.26 शैक्षिक वातावरण

विद्यालय में आधुनिक भौतिक संसाधनों के साथ-साथ गुणवत्ता युक्त शिक्षकों की उत्तम व्यवस्था है। कक्षा-कक्ष का वातावरण अच्छा है। मुस्कानमय शिक्षा देने के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाएं करवाई जाती है। बच्चों की व्यक्तिगत समस्याओं को ध्यान में रखते होते हुए उपचारात्मक कक्षाएं भी दी जाती हैं तथा खेल - खेल में सिखाने का अधिक प्रयास किया जाता है।

5.27 साज - सज्जा

शिक्षिकाओं एवं दीदियों के लिए नीली साड़ी। बालकों के लिए सफेद एवं पीली शर्ट तथा नीला पैंट। बालिकाओं के लिए सफेद और पीली शर्ट तथा नीली घांघरिया।

5.28 वार्षिक महोत्सव

महोत्सव (चित्र संख्या 5.28)

हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष वार्षिक महोत्सव का आयोजन किया जाता है तथा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसमें बालक - बालिका बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

5.29 सायं कालीन कक्षाएं

हमारे विद्यालय में सायं कालीन कक्षाएं नहीं चलती है।

5.30 पत्र पत्रिकाएं

पत्रिका (चित्र संख्या 5.30)

विद्यालय में एक छोटी सी पत्रिका छपती है जिसमें प्रवेश संबंधी नियम, विद्यालयी सुविधाएं, तथा श्री श्री के विचारों का संकलन होता है।

5.31 बाल प्रगति रिपोर्ट

प्रगति रिपोर्ट पत्र (चित्र संख्या 5.3)

बच्चों के प्रगति का मूल्यांकन चार अवस्थाओं में किया जाता है। एक्सीलेंट, गुड, सेटिस्फेक्ट्री, नॉट एप्लीकेबल इत्यादि। रिपोर्ट हर महीने तैयार की जाती है और उसी के आधार पर उन्हें शिक्षा प्रदान की जाती है।

5.32 छात्र - अध्यापक अनुपात

विद्यालय में छात्र - अध्यापक अनुपात एक अनुपात 1:10 का है।

5.33 प्रवेश फीस

विद्यालय में फीस छात्र स्वयं वहन करता है।

5.34 गर्मी की छुट्टियों विशेष आयोजन

गर्मियों में समर कैंप व समर वर्कशॉप का आयोजन किया जाता है।

5.35 पुस्तकालय

पुस्तकालय (चित्र संख्या 5.34)

विद्यालय में पुस्तकालय की उत्तम व्यवस्था है। पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध है।

5.36 भोजन

भोजन की उत्तम व्यवस्था (चित्र संख्या

दोपहर में भोजन की उत्तम व्यवस्था है। बच्चे पौष्टिक आहार लेते हैं और खुश रहते।

5.37 दिव्यांगो की व्यवस्था

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर नोएडा में दिव्यांगो के लिए विशेष व्यवस्था नहीं है

5.38 उपचारात्मक कक्षाएं

बच्चों की व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने के लिए शनिवार को उपचारात्मक कक्षाएं चलती है

5.39 हरीतिमा की स्थिति

विद्यालय में विभिन्न प्रकार के औषधीय वृक्ष, गार्डन बच्चों को खेलने का मैदान, पार्किंग की उत्तम व्यवस्था है। विद्यालय का वातावरण साफ, स्वच्छ और हरियाली युक्त है।

अध्यापिका से साक्षात्कार

प्रश्न1.क्या आपके बालक / बालिका श्री रविशंकर के विचारों का अनुसरण करते हैं?

उत्तर. जी श्री श्री रवि शंकर जी के विचारों को जैसे मानवीय, नैतिक, व अध्यात्मिक मूल्य तथा सांस्कृतिक परंपराओं का अनुसरण करते है।

प्रश्न2. क्या आप के विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं?

उत्तर. जी हां हमारे यहां वार्षिक महोत्सव, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, व अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें हमारे बालक / बालिका बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। विद्यालय में प्रतिदिन स्केटिंग, कैलीग्राफी, अबेकस, रोबोटिक्स, म्यूजिक, की कक्षाएं चलती हैं। उसमें भी हमारे बच्चों का अच्छा प्रदर्शन रहता है। गर्मियों में समर कैंप और रचनात्मक वर्कशॉप का आयोजन भी होता है जिसमें बच्चे विभिन्न प्रकार की रचनात्मक वस्तु को बनाते हैं।

प्रश्न 3. क्या आप के संस्थान में कभी अभिभावकों को बुलाया जाता है?

उत्तर. जी हां प्रत्येक शनिवार को अभिभावकों की मीटिंग बुलाई जाती है। इसमें बालक / बालिका से संबंधित जो भी समस्याएं होती हैं। अभिभावकों को अवगत कराया जाता है।

प्रश्न 4. क्या आप लोगों के द्वारा दी गई जिम्मेदारी का निर्वाहन बालक बालिका करते?

उत्तर. जी हां हमारे विद्यार्थी विनम्रता पूर्वक तथा निष्पक्ष पूर्ण ढंग से दी गई जिम्मेदारी का निर्वहन करते।

प्रश्न 5. क्या विद्यार्थियों के व्यवहार पर आपके विद्यालय संस्कृत का प्रभाव पड़ा है?

उत्तर. जी हां श्री श्री रविशंकर जी द्वारा बताए गए जीवन दर्शन, दैनिक कार्य शैली, नियमों, विचारों आदि का प्रभाव हमारे विद्यार्थियों के व्यवहार पर स्पष्ट दिखाई देते हैं।

प्रश्न 6. अनुशासनहीनता को नियंत्रित करने के लिए क्या क्या प्रयास किए जाते हैं?

उत्तर. श्री श्री के विचारों का प्रभाव होने के कारण उन में अनुशासनहीनता देखने को नहीं मिलती है। फिर भी कोई बच्चा अनुशासनहीनता करता है तो उसे दंड नहीं दिया जाता बल्कि महत्वपूर्ण विद्यालयी उत्तर दायित्व सौंप दिए जाते है।

प्रश्न 7. क्या कभी आप के विद्यार्थी बिना बताए स्कूल से बाहर घूमने - फिरने चले जाते हैं?

उत्तर. जी नहीं कोई भी बालक या बालिका बिना अनुमति के विद्यालय से बाहर नहीं जाते है।

प्रश्न 8. आपका विद्यालय समान विद्यालयों से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर. हमारे विद्यालय में मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए बच्चों को विभिन्न प्रकार के आसन, प्राणायाम, सुदर्शन क्रिया करवाई जाती है। अध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। बच्चे प्रसन्न मय वह मुस्कान मय वातावरण में शिक्षा ग्रहण करते हैं। विद्यालय आधुनिक भौतिक संसाधनों से सुसज्जित है। यहां पाठ सहगामी क्रियाओं के रूप में स्केटिंग, रोबोटिक्स, कैलीग्राफी, म्यूजिक, विभिन्न प्रकार के खेल- कूद करवाया जाता है। छोटे बच्चों को देखरेख के लिए दीदियों को लगाया जाता है।

षष्ट अध्याय

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर एक अवलोकन

6.1 विद्यालय की स्थापना
6.2 विद्यालय का प्रकार
6.3 विद्यालय की भौगोलिक स्थिति
6.4 विद्यालय की स्थित
6.5 विद्यालय स्थिति का मैप
6.6 विद्यालय का वातावरण
6.7 विद्यालय की मान्यता
6.8 विद्यालय की प्रार्थना
6.9 विद्यालय के प्राचार्य
6.10 विद्यालय के शिक्षक
6.11 विद्यालय का माध्यम
6.12 विद्यालय में प्रवेश
6.13 विद्यालय के विद्यार्थी
6.14 विद्यालय भवन
6.15 कक्षाकक्ष
6.16 स्मार्ट कक्षाकक्ष
6.17 प्रयोगशालाएं
6.18 शौचालय
6.19 कंप्यूटर कक्ष
6.20 विद्यालय समय सारणी
6.21 पाठ्यक्रम
6.22 पाठ्य सहगामी क्रियाएं
6.23 शारिरिक विकास
6.24 छात्रवृत्तियाँ
6.25 छात्रावास
6.26 विद्यालय का शैक्षिक वातावरण
6.27 सज-सज्जा
6.28 वार्षिक महोत्सव
6.29 सायंकालीन कक्षाएं
6.30 पत्र - पत्रिकाएं
6.31 बाल प्रगति रिपोर्ट
6.32 अध्यापक-छात्र अनुपात
6.33 प्रवेश फीस
6.34 गर्मियों की छुट्टियों में विशेष आयोजन
6.35 पुस्तकालय
6. 36 भोजन
6.37 दिव्यांगों के लिए व्यवस्था
6.38 उपचारात्मक कंक्षाए
6.39 हरीतिमा की स्थिति
6.40 गुरु - शिष्य सम्बन्ध

षष्टम अध्याय- निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि श्री श्री रविशंकर के शिक्षा दर्शन का शिक्षा में अहम भूमिका है। शोधकर्ता को श्री श्री रविशंकर के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये --

- यह संस्था स्ववित्तपोषित है।
- सुदर्शन क्रिया का अभ्यास करने से स्वस्थ शरीर, कंपन रहित सांस भ्रम रहित मन, अवरोध रहित बुद्धि, आघात रहित स्मरण शक्ति और दुःख रहित आत्मा संभव है।
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट, आर्ट आफ लिविंग फाउंडेशन एवं इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज संगठन द्वारा विश्व समुदाय को खुशहाल जीवन जीने, मानवीय मूल्यों के पोषण, संघर्ष के समाधान एवं शांति स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।
- Ncf-2005 में शांति शिक्षा को विशेष रूप से संदर्भित किया गया है। जो श्री श्री का अध्यात्मवाद एनसीएफ की इस अवधारणा को आधारभूमि प्रदान करता है।
- उन्होंने शिक्षा का उद्देश स्वास्थ्य शिक्षा, अध्यात्मिक विकास, चारित्रिक विकास, आत्माभिव्यक्ति, वैज्ञानिक बुद्धि का विकास, शांत एवं बंधुत्व का विकास, व्यावसायिक दक्षता का विकास होना बताया है।
- श्री श्री पाठ्यक्रम में गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाज विज्ञान, कला, व संगीत, जैसे परंपरागत विषयों के साथ-साथ व्यवसायी कौशलों का विकास करने वाले विषयों को शामिल करना भी आवश्यक मानते हैं।
- सार्वजनिक जीवन में नैतिकता को पुनर्जीवित करने के लिए इंडिया अगेंस्ट करप्शन और वर्ल्ड फोरम फॉर एथिक्स इन बिजनेस जैसे अहम आंदोलनों का संचालन भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई लड़ने का एक प्रयास है।
- वेलकम होम ट्रूप्स कार्यक्रम बुजुर्गों एवं सदस्यों के तनाव को कम करने के लिए साधन प्रदान करता है। लगभग 1586 सैनिक परिवारों ने इसका लाभ उठाया है।
- वचनबद्धता, जागरूकता, अपनेपन की भावना, मानवीय मूल्यों को बढ़ाने एवं किसी भी क्षेत्र में प्रगति के लिए जीवन के मूल सूत्र है।

- चार स्वर्णिम कुंजियां वार्षिक वेतन वृद्धि, अंतःप्रेरणा, आंतरिक रूपांतरण ,एक ध्यानस्थ मन, शांत और स्वच्छ मानसिक स्थित प्रबंधन को प्रभावी बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।
- अध्यात्मिक ज्ञान सहज ज्ञान संबंधी क्षमता, अभिनव क्षमता, और संवाद में सुधार करता है।
- संवेदनशीलता अंतर्ज्ञान है, अनुकंपा है, प्रेम है, आत्मबल है। और आत्म बल स्थिरता, तितिक्षा, आत्मविश्वास, निष्ठा एवं एक मुस्कान है जो विद्यार्थी जीवन के लिए आवश्यक है।
- कल्पना, सूचना, अवधारणा, दृष्टिकोण, और स्वतंत्रता शिक्षा में पूर्णता लाने के पांच पहलू है।
- शिक्षा 'विद्या ददाति पूर्णात्वम ' पर आधारित।
- कर्म पर विश्वास
- अपनी योग्यता का उपयोग करने के लिए कार्य और आराम में संतुलन एवं समन्वय स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।
- सहयोगीता, ब्रह्मांड विज्ञान, देखभाल और करुणा, वचनबद्धता भ्रष्टाचार से निपटने के लिए ये पांच तत्व महत्वपूर्ण है।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तकनीकी, अध्यात्मिक,मानवीय एवं नैतिक मूल्यों व नवाचारी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित।
- सभी प्रशिक्षण संस्थानों का अंतिम ध्येय मनुष्य का चहुमुखी विकास करना।
- शिक्षा सामाजिक व विश्वकल्याण पर आधारित।
- शिक्षा ऐसी है जो हिंसा मुक्त समाज का निर्माण करे।
- आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन एवं श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट द्वारा देश- विदेश में शिक्षा एवं अध्यात्म के क्षेत्र में अनेकों शैक्षिक व सामाजिक कार्य परिचालित किए जा रहे हैं।
- संस्था द्वारा शिक्षण संस्थानों की स्थापना प्रमुख रूप से वहां करना जहां के युवा हिंसा का मार्ग अपना रहे हैं।
- संपूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य इस व्यक्तित्व को करना गढ़ना है।
- श्री श्री का शैक्षिक दर्शन प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच के कड़ी के रूप में।
- शिक्षक छात्र अनुपात 1: 10 होने से शिक्षा गुणवत्ता पर विशेष बल।

6.2 शैक्षिक उपादेयता

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट द्वारा आध्यात्मिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया है। श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट द्वारा दी जा रही शिक्षा आधुनिक एवं प्राचीन शैक्षिक पद्धति का मिश्रित व समन्वय रूप है जो आज पूर्णरूपेण प्रासंगिक है। आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन हमें अच्छा जीवन जीने की कला

सिखाती है। आज के बदलते परिवेश में हमें प्राचीन शिक्षा पद्धति के साथ आधुनिक शिक्षा पद्धति को अपनाना भी अवश्य है तभी हम शिक्षोन्नती एवं राष्ट्र उन्नति की कल्पना कर सकते हैं।

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट बालक की मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का विकास करता है। खुशहाल जीवन जीने की योग बनाता है। व्यावसायिक, निर्णयन तथा प्रबंधन कौशल की क्षमता को मजबूत करता है। जिससे एक स्वस्थ एवं शांतिप्रिय समाज की कल्पना कर सकते हैं
- श्री श्री रविशंकर जी का शैक्षिक दर्शन विश्व की समस्त बुराइयों से मुक्त, संपूर्ण मानव जाति को सुखी एवं शांति पूर्ण जीवन जीने का मार्ग प्रस्तुत करता है ।
- श्री श्री के शैक्षिक दर्शन को पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए।
- देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यालयों में आर्ट ऑफ लिविंग के कार्यक्रम आयोजित होना चाहिए।
- आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के स्वयंसेवकों द्वारा गिरते भूजल स्तर को ऊंचा उठाया जा रहा है जिससे लाखों ग्रामीणों को लाभ मिल रहा है। यह प्रयास देश की राष्ट्रीय जल मिशन योजना के सपनों को साकार कर रहा है।
- स्वच्छता एवं सफाई के लिए 52466 स्वच्छता शिविर, 40500 सफाई अभियान चलाए गए जो प्रधानमंत्री द्वारा संचालित स्वच्छ भारत मिशन योजना के सपनों को साकार करता है ऐसे प्रत्येक संस्थानों संगठनो एवं विद्यालयों को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है ।
- नेतृत्व कार्यक्रम में 203220 से अधिक ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया गया उनमें नेतृत्व एवं प्रबंधन कौशल एक प्रगतिशील समाज की कल्पना कर सकते है।
- भारत के अतिवाद प्रभावित क्षेत्रों से 4500 शसस्त्र विद्रोही हिंसा को त्याग कर समाज की मुख्यधारा में फिर से शामिल हुए। ऐसे प्रयास सराहनीय है।
- भारत के अंदरूनी क्षेत्रों में गुरुदेव ने सुविधा वंचित बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाले 618 स्कूलों की शुरुआत की। जिसमें 67000 से भी अधिक बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं और वर्तमान में उन्हें उपयोगी नागरिक बनाने के लिए सुशिक्षित किया जा रहा है। ऐसे विभिन्न निजी संस्थानों को प्रेरणा लेने व कार्य करने की आवश्यकता है
- आर्ट ऑफ लिविंग जेल प्रोग्राम कैदियों के पुनर्वास में मदद कर रहा है 7 लाख से अधिक कैदियों तक पहुंच गया है। उदाहरण के लिए उरूग्वे के आंतरिक मंत्रालय द्वारा उन कैदियों की सजा को कम कर दिया है जिन्होंने आर्ट ऑफ लिविंग जेल प्रोग्राम में भाग ले लिया है।

- श्री श्री का मानना है शिक्षा ऐसी हो जो धर्म,जाति,वर्ग से इतर हिंसा मुक्त एवं खुशहाल समाज का निर्माण करें। शिक्षा ऐसी हो जो विश्व नागरिक का निर्माण करे। ऐसे अनमोल विचारों को प्रत्येक विद्यालयों में प्रासंगिकता देने एवं सीख लेने की आवश्यकता है।

6.3 अध्ययन के सुझाव

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्था है। जो समाज के हर वर्ग के विद्यार्थियों को सफलता पूर्वक मार्गदर्शन प्रदान कर रही है। श्री श्री के द्वारा विभिन्न स्कूलों की स्थापना एवं नि:शुल्क शिक्षा दी जा रही है जो भारत सरकार द्वारा संचालित 'सर्व शिक्षा अभियान' की सहभागिता निभा रहा है। अतः इसमें समाज और राष्ट्र की सहयोग अपेक्षित है
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की शिक्षण पद्धतियों, संस्कारक्षम परंपराओं का आधुनिक शिक्षण संस्थानों में जगह मिलनी चाहिए।
- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर उन्हें समाज, राष्ट्र एवं विश्वपयोगी नागरिक बनाने वाली श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट,व आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन में अपने बालक - बालिकाओं को प्रवेश दिलाने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करना चाहिए
- शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान शिक्षा पद्धति बालक के सर्वांगीण विकास में उपयुक्त नहीं है इसलिए वर्तमान प्राचीनतम शिक्षा पद्धति का समन्वित रूप राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा पर अपनाना चाहिए।
- शोधकर्ता की यही धारणा है कि श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अप्रतिम है। श्री श्री के शैक्षिक प्रयासों को अधिकाधिक विस्तारित किए जाने की आवश्यकता है इस हेतु सरकार एवं समाज का अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है। ताकि देश में आध्यात्मिक, नैतिक व मानवीय मूल्यों से युक्त आधुनिक शिक्षा का स्वप्न स्वीकार किया जा सके।
- आधुनिक परिस्थिति को देखते हुए श्री श्री की विचारों पर आधारित श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट की शिक्षाएं तथा उनका संदेश हमारे लिए कितना मूल्यवान है इसे आंकना सहज नहीं है। व्यक्ति की समस्याओं का निवारण उनके विचारों से मिल जाता है।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट एवं अन्य शिक्षण संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन
- भावी शोध में श्री श्री रविशंकर द्वारा संचालित 'आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन' का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में श्री श्री रवि शंकर की 'शुदर्शन क्रिया' पर अध्ययन किया जा सकता है।

सप्तम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

7.1 निष्कर्ष

7.2 शैक्षिक उपादेयता

7.3 सुझाव

7.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- श्री रविशंकर जैसी सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया जा सकता है।

1. अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का शैक्षिक योगदान
2. चिन्मय आश्रम का शैक्षिक योगदान
3. रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान
4. इस्कॉन का शैक्षिक योगदान हेमचंद्र संस्कृत पाठशाला का शैक्षिक योगदान
5. बिहार योग विद्यालय का शैक्षिक योगदान

संदर्भ ग्रंथ सूची

- दास, राम (2014) उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के संदर्भ में कंप्यूटर एवं इंटरनेट अनुप्रयोग संबंधी कारणों का अध्ययन, शोध प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

- तिवारी शिवकांत बुंदेलखंड क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षिक योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन पीएचडी, शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड, विश्वविद्यालय, झांसी 2001- 2002

- गुप्ता सत्येंद्र बुंदेलखंड उत्तर प्रदेश क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन पीएचडी, शिक्षाशास्त्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी 2005
-
- मदान पूनम, पाण्डेय रामशकल (2016-17) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- लाल (प्रो०) रमन बिहारी, कांत (डॉ०) कृष्ण (2013) भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं
- श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध साहित्य
- आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन द्वारा उपलब्ध साहित्य
- SSRVM.org.com
- Art of living.org.com
- gurdev shri shri ravishankar- youtube

परिशिष्ट

परिशिष्ट -1 सिटी मैप नोएडा

परिशिष्ट - 2 अवलोकन चित्रावली
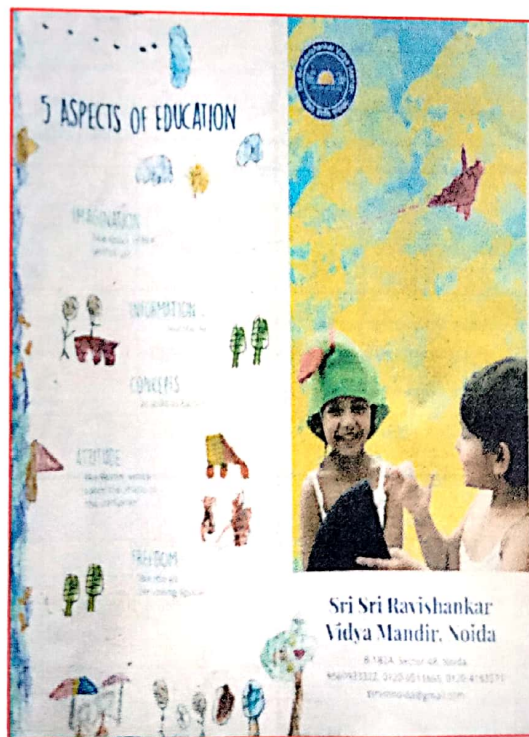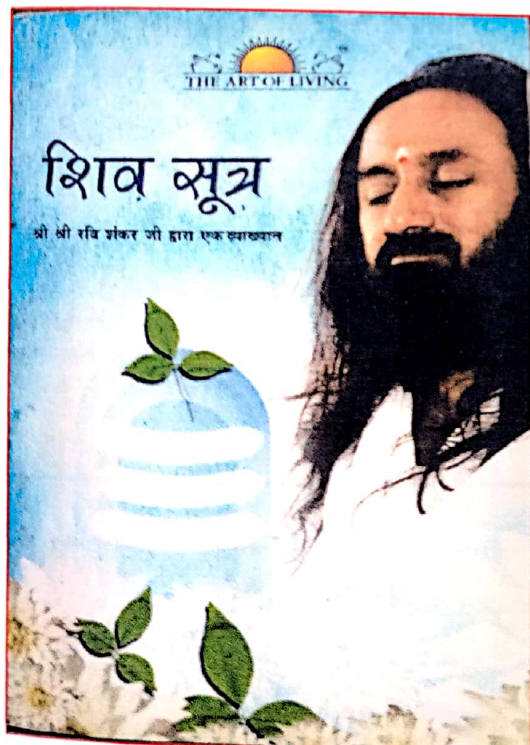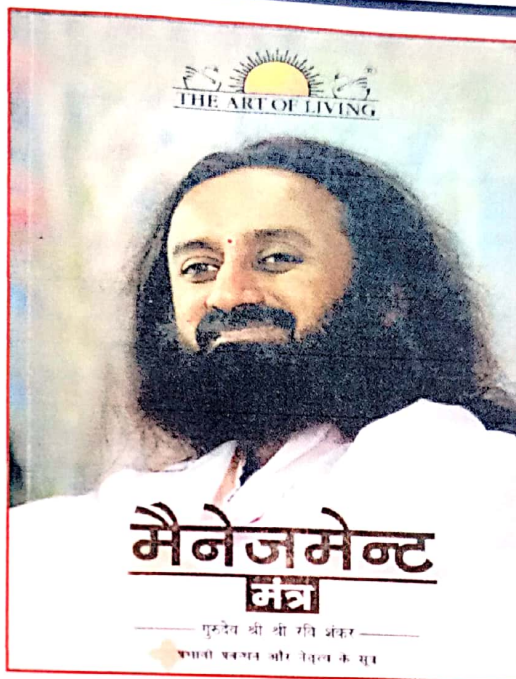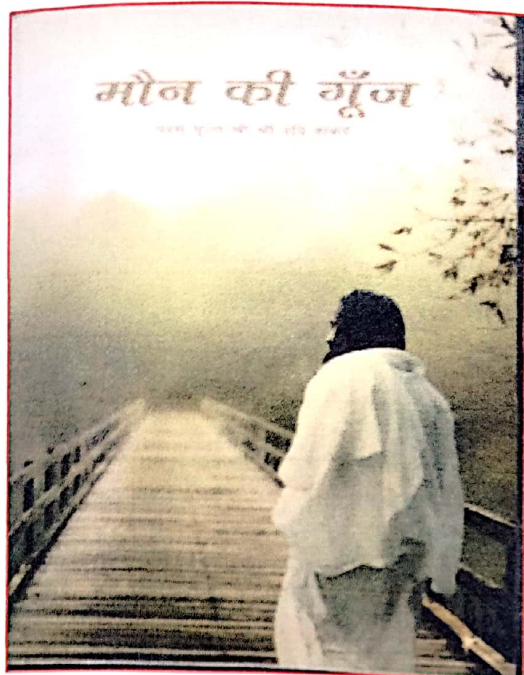
शिक्षा में अभिनव प्रयोग: श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर ट्रस्ट

चेहरे पर एक अमिट मुस्कान और एक आत्मविश्वास जिसको कोई भी हिला न सके, सफलता की निशानी है।